ओ३म्

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास-भाद्र पद संवत् 2072
सितम्बर 2015

अंक 122, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

दण्डी स्वामी विरजानन्द जी सरस्वती

महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में सम्पन्न स्वतन्त्रता दिवस की झलकियाँ

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७२
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११६
दयानन्दाब्द - १९१

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री अवनीभूषण पुरंग
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. ९८९३०६३९६०)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

वर्ष – ११, अंक ३ | ओ३म् | मास/सन् – सितम्बर – २०१५

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्जसज्जकम्,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे।।

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	वेदामृत : क्यों करें हम उसकी स्तुति ?	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : आखिर कैसे होगा पूरा – साक्षरता का लक्ष्य	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	अश्लीलता पर शीर्षासन क्यों ?	डॉ. वेदप्रताप वैदिक	०८
४.	ईश्वर की कृपा व वेदाध्ययन से ही नास्तिकता की समाप्ति संभव	मनमोहन कुमार आर्य	१०
५.	हमारा लोकतंत्र और हिन्दी	श्री जितेन्द्र वेद	१४
६.	योगेश्वर श्रीकृष्ण	डॉ. भवानीलाल भारतीय	१६
७.	विश्वकर्मा और वेद	आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी	१८
८.	शिक्षक दिवस का महत्व	राजश्री कासलीवाल	२०
९.	स्वास्थ्य का महान शत्रु–अण्डा	डॉ. हषवर्धन शर्मा	२१
१०.	हमारे आदर्श : दण्डी गुरु विरजानन्द सरस्वती	डॉ. अशोक आर्य	२३
११.	परिचय : स्वामी ऋतस्पति जी परिव्राजक		२४
१२.	पुण्य स्मरण : स्व. श्रीमती सुदेश क्षत्रिय	शुचि क्षत्रिय	२६
१३.	होमियोपैथी से टॉन्सिल का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	२८
१४.	श्रावणी सन्देश : आर्यवीरों जागो	डॉ. दिव्येश्वर शास्त्री	२९
१५.	समाचार दर्पण		३०

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिन्टर्स, मॉडल टाऊन भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

क्यों करें हम उसकी स्तुति ?

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

क ईं स्तवत् कः पृणात् को यजाते, मदुग्रमिन्धवा विश्वहावेत्।
पादाविव प्रहरन्नन्यमन्यं, कृणोति पूर्वमपरं शचीभिः ॥ ऋग्. ६.४७.१५

ऋषिः **गर्गः भरद्वाजः** । देवता **इन्द्रः** । छन्दः **त्रिष्टुप्** ।

● **(कः)** कौन **(ईं)** इस (इन्द्र) की **(स्तवत्)** स्तुति करे, **(कः)** कौन **(पृणात्)** (इसे) रिझाये, **(कः)** कौन **(यजाते)** (इसकी) पूजा करे, **(यत्)** क्योंकि **(मधवा)** धनवान् इन्द्र **(उग्रम् इत्)** उग्र की ही **(विश्वहा)** सदा **(अवेत्)** रक्षा करता है। (वह) **(शचीभिः)** (अपने) कर्मों से **(अन्यम्-अन्यम्)** एक-एक करके **(अपरं)** पिछड़े हुए को (पूर्व) अग्रगामी (तथा) **(पूर्वं)** अग्रगामी को **(अपरं)** पीछे **(कृणोति)** कर देता है, **(इव)** जैसे **(पादौ)** पैरों को **(प्र-हरन्)** आगे रखता हुआ (मनुष्य) **(अन्यम्-अन्यम्)** एक-एक करके **(अपरं)** पीछे के (पैर को) (पूर्वं) आगे (और) **(पूर्वं)** आगे के (पैर को) **(अपरं)** पीछे **(कृणोति)** करता चलता है।

तुम कहते हो कि परमैश्वर्यवान् इन्द्र प्रभु की स्तुति करो, अर्चना करो, वंदना करो। पर हम पूछते हैं कि क्यों करें हम उसकी स्तुति ? कौन उसका स्तवन करे ? कौन उसे रिझाये ? कौन उसका यजन-पूजन करें ? यह सब करने से क्या लाभ है ? तुम्हारा वह परमैश्वर्यशाली इन्द्र तो उसी की रक्षा करता है, जो उग्र है। संसार में जिसकी लाठी उसकी भैंस की ही लोकोक्ति चरितार्थ हो रही है। जो उग्र, प्रचंड और बली है, उसी की विजय होती है। पूजा करने से परमेश्वर हमारी रक्षा तो कर नहीं देगा। फिर उसकी पूजा में समय नष्ट क्यों करें ?

भाईयों ! यदि तुम ऐसा समझते हो तो भूल करते हो। यदि जगत् में उग्र लोगों की ही सदा विजय होती, तो यह जगत् कभी का समाप्त हो चुका होता। उग्र जन सदा पनपते रहते और धर्मात्माओं का शोषण करते रहते तो एक भी धर्मात्मा भूतल पर न बचता। भले ही कभी-कभी यह देखने में आता हो कि उग्र दुर्जन ही रक्षित हो रहे हैं, उन्हीं की विजय हो रही है, पर अन्ततः वे परमेश्वर के प्रकोप के ही भाजन बनते हैं। जब उनके पाप का घड़ा भर जाता है, तब एक दिन वे सबसे पीछे खड़े दिखाई देते हैं और रक्षा तो दूर, उनकी सत्ता भी खतरे में पड़ी दिखाई देतीहै। क्या तुम नहीं देखते कि जो आज पिछड़े हुए हैं, वे सबसे आगे की पंक्ति में पहुंच जाते हैं और जो सबसे आगे खड़े हैं, वे पीछे पहुंच जाते हैं ? जैसे चलता हुआ कोई मनुष्य क्रमशः पीछे के पैर को आगे बढ़ाता है और अगले पैर को पीछे ले जाता है, वैसी ही समाज में लोगों की गति हो रही है। इन्द्र परमेश्वर ही अपने कर्मों से यह कर रहे हैं। अतः परमेश्वर की स्तुति को निष्फल मत समझो। उसकी स्तुति, कृपा और प्रेरणा से एक दिन तुम अवश्य ही सबके शिरोमणि बन जाओगे। उग्र की नहीं, तुम्हारी रक्षा होगी, तुम विजयी बनोगे। अतः सब शंकाओं और सन्देहों को मिटाकर बिना प्रसाद के तल्लीन होकर इन्द्र-प्रभु की स्तुति और आराधना करो। प्रभु तुम पर कृपा करेंगे।

संस्कृतार्थ :- १. ईम् एनम् (निरु.१०.४५), २. स्तवत्, ष्टुञ स्तुतौ, लेट्, ३. पृणात् प्रीणयेत (सायण)। पृण प्रीणने लेट्। ४. जयाते, जय, लेट्। ५. शची कर्म (निघं २.१)

सम्पादकीय

आखिर कैसे होगा पूरा- साक्षरता का लक्ष्य

संस्कृत के किसी कवि ने कहा था - **"साक्षरा: विपरीत: चेत् राक्षसा: एव केवलम्"** अर्थात् साक्षरा को उल्टा करने पर राक्षसा बन जाता है, केवल अक्षर ज्ञान वास्तव में इंसान को हैवान बना देता है जब तक कि उसे जीवन से न जोड़ा जाय। आज विश्व के सामने कई मुसीबतें मुंह खोले खड़ी है। इंसानों की जरा-सी लापरवाही किसी भी पल विकराल मुसीबतों को दावत दे सकती है। पर्यावरण सकंट, प्रदूषण, जनसंख्या, बेरोजगारी, बीमारी, अकाल, प्राकृतिक आपदाओं से पूरा विश्व घिरा हुआ है। इन सब मुसीबतों से अगर विश्व को कोई चीज अब तक बचाए हुए है तो वह है इंसानों की सूझबूझ और तकनीक, सूझबूझ और तकनीक को बिना शिक्षा के प्राप्त करना कितना मुश्किल होता है यह सब जानते हैं। आज तकनीक और विकास के इस दौर में शिक्षा ही मनुष्य की सबसे बड़ी सहयोगी है। शिक्षा एक ऐसा धन है जो मनुष्य के साथ हमेशा रहती है, जो न बांटने से कम होती है और ना ही इसे कोई चुरा सकता है।

शिक्षा एक चाय वाले को देश का आईएएस आफिसर बना देती है जो आगे चलकर देश के विकास में अहम योगदान देता है। शिक्षा के महत्व का अगर बखान किया जाए तो हो सकता है एक आर्टिकल भी कम पड़ जाए, शिक्षा के महत्व को समझते हुए ही विश्व का हर देश अपनी शिक्षा व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए सभी तरह के तिकड़म अपनाता है, भारत हो या अमेरिका सभी अपनी शिक्षा व्यवस्था को लेकर हमेशा सजग रहते है, लेकिन इसके बावजूद भी विश्व में साक्षरतका दर ८४% ही है यानि हर १०० में से १६ लोग अनपढ और निरक्षर है। भारत के संदर्भ में औसत साक्षरता दर और कम यानि ७४% ही है, हालांकि नेपाल, पाकिस्तान जैसे हमारे पड़ोसी देशों में हालत हमसे भी खराब है पर विश्व में चीन जैसा भी देश है जिसके यहां साक्षरता दर ९३.३% है।

एक सर्वेक्षण के अनुसार उच्च शिक्षा का प्रतिशत अमेरिका में ३८%, जापान में ४६% जबकि भारत में सिर्फ १८% है कितना बड़ा दुर्भाग्य है, सर्वशिक्षा

अभियान का राग अलपाने वाली सरकार का सबसे कम बजट शिक्षा के लिए होता है। कम साक्षरता होने से किसी देश को कितना नुकसान उठाना पड़ता है, इसका सबूत वहां की विकास दर से ही पता चल जाता है। विश्व में साक्षरता के महत्व को ध्यान में रखते हुए ही संयुक्त राष्ट्र के शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने १७ नवंबर १९६५ को आठ सितंबर का दिन विश्व साक्षरता दिवस के लिए निर्धारित किया था। १९६६ में पहला विश्व साक्षरता दिवस मनाया गया था और तब से हर साल इसे मनाए जाने की परम्परा जारी है, संयुक्त राष्ट्र ने वैश्विक समुदाय को साक्षरता के प्रति जागरुक करने के लिए इसकी शुरुआत की थी। प्रत्येक वर्ष एक नए उद्देश्य के साथ विश्व साक्षरता दिवस मनाया जाता है।

साक्षरता का अर्थ :- साक्षरता सिर्फ किताबी शिक्षा प्राप्त करने तक ही सीमित नहीं होती बल्कि साक्षरता का तात्पर्य लोगों में उनके अधिकारों और कर्तव्य के प्रति जागरुकता लाकर सामाजिक विकास का आधार बनाना है। साक्षरता गरीबी उन्मूलन, लिंग अनुपात सुधारने, भ्रष्टाचार और आतंकवाद से निपटने में सहायक और समर्थ है। आज विश्व में साक्षरता दर सुधरी जरुर है फिर भी शत-प्रतिशत से यह कोसों दूर है।

भारत एक प्रगतिशील देश है। यहां आजादी के समय से ही देश के नेताओं ने साक्षरता बढ़ाने के लिए कई कार्य किए और कानून बनाए पर जितना सुधार कागजों में दिखा उतना असल में नहीं हो पाया। केरल को छोड़ दिया जाए तो देश के अन्य शहरों की हालत औसत है जिसमें से बिहार और उत्तरप्रदेश में तो साक्षरता दर ७० फीसदी से भी कम ही है। स्वतंत्रता के समय १९४७ में देश की केवल १२ प्रतिशत आबादी ही साक्षर थी। बाद में वर्ष २००७ तक यह प्रतिशत बढ़कर ६८% हो गया और २०११ में यह बढ़कर ७४% हो गया, लेकिन फिर भी यह विश्व के ८४% से बहुत कम है। २००१ की जनगणना के अनुसार ६५ प्रतिशत साक्षरता दर के साथ ही देश में २९ करोड़ ६० लाख निरक्षर हैं, जो आजादी के समय की २७ करोड़ की जनसंख्या के आसपास है।

सरकार द्वारा साक्षरता को बढ़ाने के लिए सर्व शिक्षा अभियान, मिड डे मील योजना, प्रौढ़ शिक्षा योजना, राजीव गांधी साक्षरता मिशन आदि न जाने कितने अभियान चलाये गए, मगर सफलता आशा के अनुरुप नहीं मिली, इनमें से मिड डे मील ही एक ऐसी योजना है जिसने देश में साक्षरता बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई। इसकी शुरुआत तमिलनाडु से हुई जहां १९८२ में तत्कालीन मुख्यमंत्री एम.जी. रामचंद्रन ने १५ साल से कम उम्र के स्कूली बच्चों को प्रति दिन नि:शुल्क भोजन देने की योजना शुरु की थी।

इसके फलस्वरुप राज्य में साक्षरता १९८१ के ५४.४ प्रतिशत से बढ़कर २००१ में ७३.४ प्रतिशत हो गई। इसके बाद २००१ में सर्वोच्च न्यायालय ने सभी राज्य सरकारों को

सरकारी सहायता प्राप्त सभी स्कूलों में निःशुल्क भोजने देने की व्यवस्था करने का आदेश दिया था। इसके अलावा देश में १९९८ में १५ से ३५ आयु वर्ग के लोगों के लिए राष्ट्रीय साक्षरता मिशन और २००१ में सर्व शिक्षा अभियान शुरु किया गया, इसमें वर्ष २०१० तक छह से १४ आयु वर्ग के सभी बच्चों की आठ साल की शिक्षा पूरी कराने का लक्ष्य था। बाद में संसद में चार अगस्त २००९ को बच्चों के लिए मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा कानून की स्वीकृति दे दी। एक अप्रैल २०१० में लागू हुए इस कानून के तहत ६ से १४ आयु वर्ग के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देना हर राज्य की जिम्मेदारी होगी और हर बच्चे का मूल अधिकार होगा। इस कानून को साक्षरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है, लेकिन इन सबके बावजूद दिल्ली अभी दूर ही दिख रही है। देश के बच्चे आज भी स्कूलों की बजाय चाय या कारखानों में देखे जाते हैं। देश में शिक्षा का कानून तो लागू कर दिया गया पर उत्तर प्रदेश, बिहार जैसे राज्यों जहां गरीबी अधिक है वहां इसके सफल होने में काफी मुश्किलें आ सकती है।

देश में कम साक्षरता दर का एक कारण शिक्षा प्राप्त लोगों का भी बेरोजगार होना है। एक गरीब आदमी जब एक साक्षर आदमी को नौकरी की तलाश में भटकते हुए देखता है तो वह सोचता है कि इससे बढ़िया तो मैं हूं जो बिना पढ़े कम से कम काम तो कर रहा हूँ और वह अपनी इसी सोच के साथ अपने बच्चों को भी शिक्षा की जगह काम करना सिखाता है। हमारे यहां की शिक्षा व्यवस्था में प्रयोगवादी सोच की कमी है। यहां थ्योरी तो बहुत ही बढ़िया ढंग से पढ़ा दी जाती है पर उसे असल जिंदगी में कैसे अमल लाया जाए यह सिखाने में चूक हो जाती है। जो बच्चे इंजीनियरिंग या कोई कोर्स आदि कर लेते हैं वह तो सफल हो जाते है पर जिसने बी.ए. आदि की डिग्री ली हो उसके लिए राहें कठिन होती है। देश की सरकार को समझना होगा कि सिर्फ साक्षर बनाने से लोगों का पेट नहीं भरेगा, बल्कि शिक्षा के साथ कुछ ऐसा भी सिखाना होगा जिससे बच्चे आगे जाकर अपना पेट पाल सके।

आज विश्व आगे बढ़ता जा रहा है और अगर भारत को भी प्रगति की राह पर कदम से कदम मिलाकर चलना है तो साक्षरता दर में वृद्धि करनी ही होगी। आज आवश्यकता है रोजगारमूलक शिक्षा की जो अपने पाँव में खड़ा होना सीखा सके, आजकल बिना सोचे समझे बच्चे इंजीनियरिंग में कूद पड़ते हैं और डिग्री लेकर फिर धक्के खाते फिरते हैं अपने देश में हर साल ४ लाख इंजीनियर तैयार होते हैं, प्रायवेट एवं गवर्नमेंट में २ लाख खप जाते हैं बाकि २ लाख सिर्फ बेरोजगारों की भीड़ बढ़ाते हैं। शिक्षा को समाजोपयोगी एवं कलात्मक बनाने की आवश्यकता है जिसे पाकर छात्र सम्मान के साथ जीवन जीने में सक्षम हो सके।

– कर्मवीर शास्त्री

ज्वलन्त प्रश्न

अश्लीलता पर शीर्षासन क्यों ?

- **डॉ. वेदप्रताप वैदिक**, अध्यक्ष, भारतीय विदेश नीति परिषद

इंटरनेट पर दिखाई जाने वाली अश्लील वेबसाइटों के बारे में हमारी सरकार ने शुरु में बहुत अच्छा रवैया अपनाया था। उसने ८५७ अश्लील वेबसाइटों पर प्रतिबंध लगा दिया था, लेकिन फिर उसने सिर्फ बच्चों की अश्लील वेबवाइटों पर अपने प्रतिबंध को सीमित कर दिया। सरकार ने यह शीर्षमान क्यों किया ?

किसी की हिम्मत नहीं हुई कि वह अश्लीलता के समर्थकों का विरोध करें। जाहिर है कि स्वतंत्र भारत में भी दिमागी गुलामी की जड़ें कितनी गहरी और हरी है। आप यदि कोई अनुचित बात अंग्रेजी में कहें तो वह भी मान ली जाएगी।

सरकार ने यह शीर्षासन किया, अंग्रेजी अखबारों और चैनलों की हायतौबा के कारण ! किसी की भी हिम्मत नहीं हुई कि वह अश्लीलता के समर्थकों का विरोध करें। इससे साफ जाहिर होता है कि स्वतंत्र भारत में भी दिमागी गुलामी की जड़ें कितनी गहरी और हरी हैं। आप यदि कोई अनुचित और ऊटपटांग बात करें, लेकिन अंग्रेजों में कहें तो वह भी मान ली जाएगी। मुझे आश्चर्य है कि भारत की संसद और विधानसभाओं में भी किसी नेता ने इस मुद्दे को नहीं उठाया। देश में संस्कृति और नैतिकता का झंडा उठानेवाली संस्थाओं- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, आर्यसमाज और गांधी-संस्थाओं की चुप्पी भी आश्चर्यजनक है। सारे साधु-संतों, मुल्ला-मौलवियों, ग्रंथियों और पादरियों का मौन भी चौकाने वाला है। शायद इसका बड़ा कारण यह भी हो सकता है कि इन्हें पता ही न हो कि इंटरनेट की पोर्नोग्राफी क्या होती है। यह तो इंदौर के वकील कमलेश वासवानी की हिम्मत है कि उन्होंने इन मामले को अदालत में लाकर अश्लील वेबसाइटों के माथे पर तलवार लटका दी है।

यदि जनता के दबाव के आगे कोई सरकार झुकती है तो इसे मैं अच्छा ही कहूंगा। इसका मतलब यही है कि सरकार तानाशाह नहीं है। भूमि-अधिग्रहण विधेयक पर भी सरकार ने लचीले रवैए का परिचय दिया है, लेकिन

अश्लीलता के सवाल पर क्या सरकार यह कह सकती है कि वह लोकमत का सम्मान कर रही है ? दस-बीस अंग्रेजी अखबारों में छपे लेखों और लगभग दर्जन भर चैनलों की हायतौबा को क्या १३० करोड़ लोगों की राय मान लिया जा सकता है ? इसके पहले कि सरकार अपने सही और साहसिक कदम से पीछे हटती, उसे एक व्यापक सर्वेक्षण करवाना चाहिए था, सांसदों की एक विशेष जांच समिति बिठानी चाहिए थी, अपने मार्गदर्शक मंडल में सलाह करनी चाहिए थी। ऐसा किए बिना एकदम पल्टी खा जाना किस बात का सूचक है ? एक तो इस बात का कि वह सोच-समझकर निर्णय नहीं लेती जो निर्णय लेती है, उस पर टिकती नहीं है यानी उसका आत्म-विश्वास डगमगा रहा है। यदि मोदी सरकार का यह हाल है तो देशवासी व अन्य सरकारों से क्या उम्मीद कर सकते हैं ?

अब संघ स्वयंसेवकों की यह सरकार अपनी पीठ खुद ठोक रही है कि हमने वेबसाइट ऑपरेटरों को नया निर्देश दिया है कि वे बच्चों से संबंधित अश्लील वेबसाइटों को बंद कर दें। बेचारे आपरेटर परेशान है, वे कहते हैं कि कौन सी वेबसाइट बाल-अश्लील है और कौन-सी व्यस्क-अश्लील हैं, यह तय करना मुश्किल है। सिर्फ बाल-अश्लील वेबसाइटों पर प्रतिबंध को अदालत और सरकार दोनों ही उचित क्यों मानती है ? उनका कहना है कि इसके लिए बच्चों को मजबूर किया जाता है कि वह हिंसा है, लालच है। मैं पूछता हूं कि वयस्क वेबसाइटों पर जो होता है, वह क्या है ? ये वयस्क वेबसाइटें क्या औरतों पर जुल्म नहीं करती ? औरतों के साथ कितना वीभत्स और घृणित बर्ताव इन वेबसाइटों पर होता है,

उसे अश्लील कहना भी बहुत कम करके कहना है। जो पुरुष भी स्वेच्छा या प्रसन्नता से नहीं, पैसों के लिए अपना ईमान बेचते हैं, उन सब स्त्री-पुरुषों की मजबूरी, क्या उन बच्चों की मजबूरी से कम है ? हमारी सरकार के एटार्नी जनरल अदालत में खड़े होकर बाल-अश्लीलता के खिलाफ तो बोलते हैं, जो कि ठीक है, लेकिन महिला-अश्लीलता के विरुद्ध उनकी बोलती बंद क्यों है ? यह बताइए कि इन चैनलों को देखने से आप बच्चों को कैसे रोकेंगें ? इन गंदे चैनलों के लिए काम करने वाले बच्चों की संख्या कितनी होगी ? कुछ सौ या कुछ हजार ? लेकिन इन्हें देखने वाले बच्चों की संख्या करोड़ों में है। क्या आपको अपने इन बच्चों की भी कुछ परवाह है या नहीं ? सारे अश्लील वेबसाइटों पर दिखाए जाने वाले विज्ञापन पैसे की खदान है। यह पैसा सरकारों को भी बंटता है। सरकारें ऐसे वेबसाइटों को इसलिए भी चलाते रहना चाहते है कि जनता का ध्यान बंटा रहे। इसके दिमाग में बगावत के बीज पनप न सकें। रोमन साम्राज्य के शासकों ने अपनी जनता को भरमाने के लिए हिंसक मनोरंजन के कई साधन खड़े कर रखे थे। पश्चिम के भौतिकवादी राष्ट्रों ने अपनी जनता को अश्लीलता की लगभग असीम छूट इसीलिए दे रखी है कि वे लोग अपने में ही मग्न रहें, लेकिन इसके भयावह दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं। हिंसा और दुष्कर्म के लिए जितने अपराधी अमेरिकी जेलों में बंद है, दुनिया के किसी देश में नहीं है।

इन अश्लील चैनलों के लिए काम करने वाले बच्चों की संख्या कुछ हजार होगी, लेकिन इन्हें देखने वाले बच्चों की संख्या करोड़ों में है। क्या आपको अपने बच्चों की कुछ भी परवाह नहीं है ?

यह तर्क बहुत ही कमजोर है कि सरकार का काम लोगों के शयन-कक्षों में ताक-झांक करना नहीं है। लोग अपने शयन-कक्ष में जो करना चाहे, करें। इससे बढ़कर गैर-जिम्मेदाराना बात क्या हो सकती है ? क्या अपने शयन-कक्ष मेंआप हत्या या आत्महत्या कर सकते हैं ? ताक-झांक का सवाल ही तब उठेगा, जबकि आप गंदी वेबसाईटें छुप-छुपकर देख रहे हों। जब गंदी वेबसाइटों पर प्रतिबंध होगा तो कोई ताक-झांक करेगा ही क्यों ? उसकी जरुरत ही नहीं होगी। हर शयन-कक्ष की अपनी पवित्रता होती है। वहां पति और पत्नी के अथवा किसका प्रवेश हो सकता है ? यदि आप गंदी वेबसाइटों को जारी रखते हैं तो उनसे आपका चेतन और अचेतन इतने गहरें में प्रभावित होगा कि वह कमरों की दीवारें तोड़कर सर्वत्र फैल जाएगा। यह अश्लीलता मनोरंजक नहीं, मनोभंजक है। यह भी हमारे देश में दुष्कर्म और व्याभिचार को बढ़ा रही है। यदि यह अश्लीलता अच्छी चीज है तो उसे आप अपने बच्चों, बहनों और बेटियों के साथ मिलकर क्यों नहीं देखते ? आपने सिनेमा पर सेंसर क्यों बिठा रखा है ? आप लोगों को पशुओं की तरह सड़कों पर ऐसा करने की अनुमति क्यों नहीं देते ? यह तो व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सर्वोच्च उपलब्धि होगी। अश्लील पुस्तकें तो बहुत कम लोग पढ़ पाते हैं। अश्लील वेबसाइटें तो करोड़ों लोग देखते हैं। आपको पहले किस पर प्रतिबंध लगाना चाहिए ?

इन अश्लील वेबसाइटों की तुलना में कोणार्क की प्रतिमाओं तथा महर्षि वात्स्यायन के कामसूत्र से करना अपनी विकलांग बौद्धिकता का सबूत देना है। कामसूत्र काम को कला के स्तर पर पहुंचाता है। उसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का अंग बनाता है। वह काम का उदात्तीकरण करता है जबकि ये अश्लील वेबसाइटों काम को घृणित, फूहड़, यांत्रिक और विकृत बनाती है। काम के प्रति भारत का रवैया बहुत खुला हुआ है। वह वैसा नहीं है, जैसा कि अन्य देशों का है। उन संपन्न और शक्तिशाली देशों को अपनी दबी हुई काम-पिपासा अपने ढंग से शांत करने दीजिए। आप उनका अंधानुकरण क्यों करें ?

यह तर्क बहुत ही कमजोर है कि लोग अपने शयन-कक्ष में जो करना चाहें करें। इससे बढ़कर गैर-जिम्मेदाराना बात क्या हो सकती है ? क्या अपने शयन-कक्ष में आप हत्या या आत्महत्या कर सकते हैं ?

वैचारिक

ईश्वर की कृपा व वेदाध्ययन से ही नास्तिकता की समाप्ति संभव

- मनमोहन कुमार आर्य

खुदा के बन्दों को देखकर खुदा से मुनकिर हुई है दुनिया,
कि जिसके ऐसे बन्दे हैं वो कोई अच्छा खुदा नहीं।

आजकल संसार में सभी मतों के शिक्षित व धनिका मनुष्यों का आचरण प्रायः श्रेष्ठ मानवीय गुणों के विपरीत पाया जाता है, जो मनुष्यों को नास्तिक बनाने में सहायक होता। इसका एक कारण ऐसे लोगों में वेदों का ज्ञान न होना भी है। वेदों का अध्येता वा ज्ञानी मनुष्य कभी नास्तिक नहीं हो सकता, ऐसा वेदों का कुछ अध्ययन करने पर हमारा विश्वास है। वेदों में जो भी मान्यतायें व सिद्धान्त हैं वह सब युक्ति, तर्क व सृष्टिक्रम के अनुकूल है। ईश्वर का स्वरुप व उसके कार्य भी युक्ति, तर्क व बुद्धि संगत है। वेदों के ज्ञान से दूर नास्तिक मनुष्य को ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करने वाला ईश्वर-विश्वासी कैसे बनाया जाये ? क्या नास्तिक व्यक्ति के सभी प्रश्नों व शंकाओं का उत्तर देने से वह व्यक्ति आस्तिक बन सकता है ? प्रायः ऐसा नहीं होता। सभी शंकाओं का उत्तर दे देने पर भी जिन कारणों से वह नास्तिक बना होता है, वह उसके सम्मुख होते हैं, जिससे वह ईश्वर के अस्तित्व को मानने को तैयार नहीं होता। उसकी आत्मा, मन व बुद्धि में ईश्वर के अस्तित्व व उसके गुण-कर्म-स्वभाव का विश्वास दिलाना कठिन कार्य होता है। इससे सम्बन्धित एक बहुत ही प्रेरक उदाहरण हमें भारत में गुरुकुल पद्धति के पुरुषाद्धारक व स्वतन्त्रता संग्राम के अपने समय के प्रथम पंक्ति के नेता स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन में मिलता है, जिसका वर्णन उन्होंने स्वयं अपनी लेखनी में अपनी आत्म कथा **'कल्याण मार्ग के पथिक'** में किया है।

स्वामी श्रद्धानन्द अपनी युवावस्था में नास्तिक बन गये थे, वह लिखते हैं कि १४ श्रावण संवत् १९३६ (अगस्त १८८०) के दिन स्वामी दयानन्द बांसबरेली पधारे। ३ भाद्रपद को चले गये। स्वामी जी महाराज के पहुंचते ही कोतवाल साहब (स्वामी श्रद्धानन्द के पिता श्री नानकचन्द जी) को हुकुम मिला कि पंडित दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानों के अन्दर फिसाद को रोकने का बन्दोबस्त कर दें। **पिताजी स्वयं सभा में गये और स्वामी जी महाराज के व्याख्यानों से ऐसे प्रभावित हुए (कोतवाल साहिब कट्टर पौराणिक थे और वैदिक सिद्धान्तों को न जानते थे और न मानते थे) कि उनके सत्संग से मुझ नास्तिक की संशयनिवृत्ति का उन्हें विश्वास हो गया। रात को घर आते ही मुझे कहा - "बेटा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द जी का युवावस्था का नाम)! एक दण्डी संन्यासी आये हैं, बड़े विद्वान् और योगीराज हैं। उनकी वक्तृता सुनकर तुम्हारे संशय दूर हो जाएंगे। कल मेरे साथ चलना।" उत्तर में कह तो दिया कि चलूंगा परन्तु मन में ही वही भाव रहा कि केवल संस्कृत जानने वाला साधु बुद्धि की बात क्या करेगा ?** दूसरे दिन बेगम बाग की कोठी में पिताजी के साथ पहुंचा जहां व्याख्यान हो रहा था। **उस दिव्य आदित्यमूर्ति को देख कुछ श्रद्धा और भी बढ़ी। अभी दस मिनट वक्तृता नहीं सुनी थी कि मन में विचार किया - यह विचित्र व्यक्ति है कि केवल संस्कृतज्ञ होते हुए युक्तियुक्त बातें करता है कि विद्वान् दंग हो जाए। व्याख्यान परमात्मा के निज नाम ओ३म् पर था। वह पहले दिन का आत्मिक आह्लाद कभी भूल नहीं सकता। नास्तिक रहते हुए भी आत्मिक आह्लाद में निमग्न कर देना ऋषि-आत्मा का ही काम था।** उसी दिन दण्डी स्वामी से निवेदन किया गयाच कि टाऊनहॉल मिल गया है। इसलिए कल से व्याख्यान वहां शुरु होंगे। स्वामी जी ने उच्च स्वर से कह दिया कि सवारी (बग्घी वा घोड़ा गाड़ी) समय पर पहुंच जाय करेगी तो वह तैयार मिलेंगे।

टाऊन हाल में जब तक 'नमस्ते', 'पोप', 'पुराणी',

'जैनी', 'किरानी', 'कुरानी' इत्यादि परिभाषाओं का अर्थ बतलाते रहे तब तक पिता जी श्रद्धा से सुनते रहे, परन्तु जब मूर्तिपूजा और ईश्वरावतार का खण्डन होने लगा तो जहां एक ओर मेरी श्रद्धा बढ़ने लगी वहां पिताजी ने तो आना बन्द कर दिया और एक अपने मातहत थानेदार की ड्यूटी लगा दी। २४ अगस्त की शाम तक मेरा समय-विभाग यह रहा कि दिन का भोजन करके दोपहर को बेगम बाग की कोठी पहुंच ड्योढ़ी पर बैठ जाता। ढाई से चार बजे के बीच में जब ऋषि का दरबार लगता तो आज्ञा होते ही जो पहला मनुष्य आचार्य ऋषि को प्रणाम करता वह मैं था। प्रश्नोत्तर होते रहते और मैं उनका आनन्द रहता। व्याख्यान के बाद बीस मिनट तक सब दरबारी विदा हो जाते और आचार्य चलने की तैयारी कर लेते। मैं अपनी वेगनट पर सीधा टाउनहाल पहुंचता। व्याख्यान का आनन्द उठाकर उस समय तक घर न लौटता जब तक कि आचार्य दयानन्द की बग्घी उनके डेरे की ओर न चल देती। २५, २६, २७ अगस्त को ऋषि दयानन्द के पादरी स्काट के साथ तीन शास्त्रार्थ हुए। विषय प्रथम दिवस पुनर्जन्म, द्वितीय दिन ईश्वरावतार और तीसरे दिन यह था कि मनुष्य के पाप बिना फल भुगते क्षमा किये जाते हैं या नहीं। पहले दो दिन लेखकों में मैं भी थी। परन्तु दूसरी रात को मुजे सन्निपात ज्वर हो गया और फिर आचार्य दयानन्द के दर्शन मैं न कर सका। ३० श्रावण से ९ भाद्रपद (१५ से २५ अगस्त) तक ऋषि जीवन-सम्बन्धी अनेक घटनाएं मैंने देखी जिनमें से उन्हीं कुछ-एक को यहां लिखूंगा, जिनका प्रभाव मुझ पर ऐसा पड़ा कि अब तक मेरी आंखों के सामने घूम रही है। स्वामी श्रद्धानन्द जीं ने स्वामी दयानन्द जी के बरेली में उपदेशों की अपनी आत्मकथा में विस्तार से चर्चा की है जो पढ़ने योग्य है। हम अन्य अप्रासंगिक किन्तु अति महत्वपूर्ण चर्चा छोड़कर अपने मुख्य विषय पर आते हैं कि स्वामी दयानन्द से उनका नास्तिकता के विषय में संवाद था। स्वामी श्रद्धानन्द जी लिखते है- एक अन्तिम घटना के साथ इस अपूर्व सत्संग की कथा समाप्त करता हूं। यद्यपि आचार्य दयानन्द के उपदेशों ने मुझे मोहित कर लिया था, तथापि मैं मन में सोचा करता था कि यदि ईश्वर और वेद के ढकोसले को पंडित दयानन्द स्वामी तिलांजलि दे दें तो फिर कोई भी विद्वान् उनकी अपूर्व युक्तियों और तर्कना-शक्ति का सामना करने वाला न रहे। **मुझे अपने नास्तिकपन का उन दिनों अभिमान था।** एक दिन ईश्वर के अस्तित्व पर आक्षेप कर डाले। पांच मिनट के प्रश्नोत्तर में ऐसा घिर गया कि जिह्वा पर मुहर लग गयी। मैंने कहा - **"महाराज! आपकी तर्कना शक्ति बड़ी तीक्ष्ण है। आपने मुझे चुप तो करा दिया, परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती (अस्तित्व) है।"** दूसरी बार फिर तैयारी करके गया, परन्तु परिणाम पूर्ववत् ही निकला। तीसरी बार फिर पूरी तैयारी करके गया, परन्तु मेरे तर्क को फिर पछाड़ मिली। मैंने फिर अन्तिम उत्तर वही दिया - **महाराज! आपकी तर्कना-शक्ति बड़ी प्रबल है। आपने मुझे चुप तो करा दिया, परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती है? महाराज पहले हंसे, फिर गम्भीर स्वर से कहा देखों, तुमने प्रश्न किये, मैंने उत्तर दिये- यह युक्ति की बात थी। मैंने कब प्रतिज्ञा की थी कि मैं तुम्हारा विश्वास परमेश्वर पर करा दूंगा? तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास उस समय होगा जब वह प्रभु स्वयं तुम्हें विश्वासी बना देंगे।** अब स्मरण आता है कि नीचे लिखा उपनिषद्वाक्य उन्होंने पढ़ा था - **नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रेतेन। यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम्॥** (कठोपनिषद १/२/२३)।

स्वामी श्रद्धानन्द लिखित आत्मा कथा **'कल्याण मार्ग पथिक'** सभी के लिये पढ़ने योग्य एक अत्युत्तम ग्रन्थ है। गांधी जी ने भी इसे पढ़ा था। वह स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपना बड़ा भाई कहते थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस कथ्य में अपने जीवन की एक अत्यन्त निजी घटना भी दी है, जिसका उल्लेख शायद कोई मनुष्य नहीं कर सकता। इसके पढ़ने के बाद गांधी जी ने भी अपने जीवन की उससे मिलती-जुलती घटना अपनी आत्म कथा में वर्णित की थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी की आत्मकथा की भूमिका से कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण शब्दों को पाठकों के अवलोकनार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। **ऋषिवर! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे 41 वर्ष हो चुके, परन्तु तुम्हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय-पट पर अब तक ज्यों-की-त्यों अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त**

कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते-गिरते तुम्हारे स्मरणमात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी गिरी हुई आत्माओं की काया पलट दी, इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है? परमात्मा के बिना, जिनकी पवित्र गोद में तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली हुई अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया है? परन्तु अपरने विषय में मैं कह सकता हूं कि तुम्हारे सत्संग ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन-लाभ करने के योग्य बनाया?

हमें लगता है कि संसार में अनेक प्रकार के नास्तिक हैं। कुछ नास्तिक तो ऐसे हैं जो कहते हैं कि हम ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते। हमारे सभी कम्युनिस्ट भाई और संसार के अनेक वैज्ञानिक इस श्रेणी में लिया जा सकते हैं। दूसरे नास्तिक हम उन लोगों को भी मानते हैं जो धर्म-कर्म तो खूब करते हैं, अपने मत, पन्थ व सम्प्रदाय की धर्म-पुस्तकों को पूरी श्रद्धा पूर्वक पढ़कर उन पर आचरण करते हैं परन्तु ईश्वर के सत्य स्वरुप को न जानने और उसकी सत्य पद्धति वैदिक योग विधि से उपासना न करने के कारण वह भी अर्ध नास्तिक ही कहे जायेंगे। उनकी भ्रान्तियाँ महर्षि दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश आदि व वेद के स्वाध्याय से ही दूर हो सकती है, जिनकी प्रेरणा इन अर्द्धनास्तिकों के धर्म गुरु आदि नहीं करते अपितु उन्हें सत्य से विमुख रखने का प्रयास करते हैं। अतः सत्यार्थ प्रकाश व वैदिक साहित्य को पढ़े बिना उन सभी की नास्तिकता समाप्त होना असम्भव प्रतीत होता है। हमें लगता है कि **यदि वह सत्यार्थ प्रकाश व वेदादि साहित्य का अध्ययन करें तब ही ईश्वर की कृपा होने अथवा ईश्वर के कृपाकटाश होने पर ही वह सच्चे आस्तिक व सच्चे ईश्वर विश्वासी बन सकते हैं, जिस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन में हुआ।** यह बात हम निष्पक्ष रुप से अपने ज्ञान व अनुभव के आधार पर कह रहे हैं। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में स्तुति प्रार्थना और उपासना का विस्तार से उल्लेख किया है और उपासना की विधि और उसका फल क्या होता है, यह भी बताया है। एतदविषयक उनके विचार पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत हैं। वह लिखते हैं कि जब उपासना करना चाहें, तब एकान्त शुद्ध देश में जाकर, आसन लगा प्राणायाम कर बाह्य विषयों में इन्द्रियों को रोक, मन को नाभिप्रदेश में, वा हृदय, कण्ठ, नेत्र, शिखा अथवा पीठ के मध्य हाड़ में किसी स्थान पर स्थिर कर अपने आत्मा और परमात्मा का विवेचन करके परमात्मा में मग्न होकर संयमी होवें। जब इन साधनों को करता है, तब उसका आत्मा और अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है। नित्य प्रति ज्ञान-विज्ञान बढ़ाकर मुक्ति तक पहुंच जाता है। जो आठ प्रहर में एक घड़ी भर भी इस प्रकार ध्यान करता है वह सदा उन्नति को प्राप्त हो जाता है। उपासना का फल बताते हुए वह कहते हैं कि जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत से निवृत हो जाता है, वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष-दुःख छूटकर परमेश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इसलिये परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिए। **उपासना से आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी न घबरावेगा, और सब को सहन कर सकेगा। क्या वह छोटी बात है? और जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता (यह बात नास्तिक, अर्धनास्तिक और सही विधि से उपासना न करने वाली सभी लोगों पर लागू होती है) वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत के सब पदार्थ बनाकर जीवों को सुख के लिये दे रक्खे हैं, उसका गुण भूल जाना, ईश्वर ही को न मानना कृतघना और मूर्खता है।**

नास्तिक लोगों का मत होता है कि ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं है। इसी कारण से वेद और धर्म-कर्म को नहीं मानते। ऐसे लोगों का नास्तिक बनना भी कई बार मत-पन्थों की मिथ्या मान्यतायें व कर्म-काण्ड ही होते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द भी मिथ्या मान्यताओं, पाखण्ड से पूर्ण परम्पराओं व धार्मिक कहे जाने वाले लोगों के अनाचार को देखकर ही नास्तिक हुए थे। अतः ईश्वर व उसकी उपासना की विधि को तर्क, युक्ति व बुद्धि की कसौटी पर कस कर ही स्वीकार करना चाहिए। प्रश्न है कि आप ईश्वर-ईश्वर कहते हो, परन्तु

उसकी सिद्धि किस प्रकार करते हो ? स्वामी दयानन्द सब प्रत्यक्षादि प्रमाणों से। प्रश्न-ईश्वर में प्रत्यक्षादि प्रमाण कभई नहीं घट सकते ? स्वामी जी - **इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्** (न्यायदर्शन)। जो श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा, घ्राण और मन का शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गन्ध, सुख-दुःख सत्यासत्य विषयों के साथ सम्बन्ध होने से ज्ञान उत्पन्न होने से ज्ञान उत्पन्न होता है, उसको **'प्रत्यक्ष'** कहते हैं, परन्तु वह निर्भ्रम हो। अब विचारना चाहिये कि इन्द्रियों और मन से गुणों का प्रत्यक्ष होता है गुणी का नहीं। जैसे चारों त्वचा आदि इन्द्रियों से स्पर्श रुप, रस और गन्ध का ज्ञान होने से गुणी जो पृथ्वी उसका आत्मा-युक्त मन से प्रत्यक्ष किया जाता है, वैसे इस प्रत्यक्ष सृष्टि में रचनाविशेष आदि (कर्म और) ज्ञानादि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है। और जब आत्मा मन और मन इन्द्रियों को किसी विषय में लगता, वा चोरी आदि बुरी वा परोपकार आदि अच्छी बात करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है, उस समय जीव की इच्छा-ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाता है। उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निःशंकता और आनन्दोत्साह उठता है। **वह जीवात्मा की ओर से नहीं, किन्तु परमात्मा की ओर से है वह होता है। और जब जीवात्मा शुद्ध होके परमात्मा का विचार करने में तत्पर रहता है, उसको उसी समय दोनों प्रत्यक्ष होते हैं।** जब परमेश्वर का प्रत्यक्ष होता है तो अनुमानादि से परमेश्वर के ज्ञान होने में क्या सन्देह है?क्योंकि कार्य को देखके कारण का अनुमान होता है। हम समझते हैं कि जिस व्यक्ति को यह बातें समझ में आ जाती है उसे फिर ईश्वर के अस्तित्व के बारे में शंका नहीं रहती। अतः इन पंक्तियों को बार बार पढ़ कर उसका यथार्थ भाव समझने का प्रयास करना चाहिये।

स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द की भांति सच्चा आस्तिक बनने के लिए ईश्वर की कृपा के साथ वेदादि सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय व अध्ययन आवश्यक है। ईश्वर के प्रति श्रद्धा व विश्वास तभी जाग्रत होते हैं जब ईश्वर की कृपा होती है।

पता - १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

सन्तों के स्वाभाविक गुण

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा सदसि वाक्पटुता युधिविक्रमः ।
यशसि चाभिरतिर्व्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ।।

(भर्तृहरि)

भावार्थ : बड़े से बड़े सङ्कट की सम्प्राप्ति पर भी घबराते नहीं। धैर्य्य से कभी च्युत नहीं होते। अभ्युदय चाहे कितना ही क्यों न हो जावे परन्तु क्षमा रुपी गुण का त्याग नहीं करते हैं। सभा-परिपदादि में वाणी का चातुर्य्य उनका देखने लायक होता है। युद्ध का अवसर उपस्थित हो जावे तो पराक्रम ही दिखलाते हैं, कभी पीछे नहीं हटते। और अपनी कीर्ति के प्रति सदैव उदासीनता बतलाते हैं। व्यसन रखते हैं तो केवल शास्त्रों के अध्ययन का ही। महान् आत्माओं, श्रेष्ठ पुरुषों के तो ये अकृत्रिम सहजसिद्ध स्वाभाविक ही गुण है ? इन्हें डालने की भला उन्हें क्या ?

- सुभाषित सौरभ

हिन्दी दिवस १४ सितंबर

हमारा लोकतंत्र और हिन्दी

- जितेन्द्र वेद

आजादी के बाद भारत में जो शासन व्यवस्था अपनाई गई वह है - लोकतंत्र। इस शब्द के कई समानार्थी शब्द भी उपलब्ध है - यथा प्रजातंत्र, जनतंत्र इत्यादि नाम कुछ भी हो, पर एक बात जो इन शब्दों में ध्वनित होती है - वह है आम आदमी की शासन व्यवस्था पर जब तक आम आदमी की भाषा शासन व्यवस्था की भाषा नहीं बनेगी, तब तक लोकतंत्र अधूरा ही रहेगा।

इसी के साथ अब्राहम लिंकन की जनता के लिए, जनता के द्वारा, जनता की, वाली परिभाषा सिर्फ किताबी, ख्यालों में, बसने वाली परिभाषा बनकर रह जाएगी। यह विडंबना नहीं तो और क्या है कि आजादी के ६९ वर्षों बाद भी हिन्दी संवादन नहीं, सिर्फ अनुवाद की भाषा बनकर रह गई है। तमाम संवैधानिक अनुच्छेदों और उपबंधों के बावजूद हिन्दी हाशिए पर ही रह रही है। उसे फूटपाथ पर गुजर-बसर करना पड़ रहा है, जबकि अंग्रेजी वाले तीन, चार, पांच सितारों वाली होटलों में ऐश कर रहे हैं।

संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद ३४३ (१) में देवनागरी लिपि में लिखी गई हिन्दी को संघ की भाषा का दर्जा दिया है। पर क्या बीती अर्धशती में हिन्दी संघ की भाषा बन सकी है ? आज भी, अधिकांश काम हिन्दी के बजाय अंग्रेजी में हो रहे हैं। कई सरकारी महकमों में तो अधिकारियों को हिन्दी की चिंदी करने में गर्व की अनुभूति होती है।

दक्षिण भारत में हिन्दी मुख्य भाषा के रुप तो नहीं, पर पूरक भाषा के रुप में संवाद का माध्यम बन चुकी है। यदि कहीं कोई समस्या है तो वह है - सरकारी दफ्तरों में और सायबर संस्कृति में, जहाँ हिन्दी, अंग्रेजी की दासी के रुप में पेश की जा रही है। यदि आप कश्मीर से कन्याकुमारी और कच्छ से कोलकाता (उत्तर पूर्व भी शामिल) तक देखें तो क्षेत्रीय भाषाओं के प्रभाव वाली टूटी-फूटी ही सही, पर सबको हिन्दी आती है। यानी हिन्दी इस देश के कोने-कोने में रच-बस गई है। अतः संवाद का माध्यम बनने में पूर्णतया समर्थ है। यदि कोई कहता है कि दक्षिण वाले हिन्दी का विरोध करते हैं तो शायद यह भी मान्य नहीं है। कम-से-कम कर्नाटक, केरल और आंध्रप्रदेश के प्रमुख शहरों में ऐसा कहीं देखने को नहीं मिला। तिरुअनंतपुरम में तो एक दुकानदार ने मेरी टूटी-फूटी मलायम सुनकर यह कहा कि यदि आप उत्तर भारतीय हैं तो आप हिन्दी में बात कर सकते हैं। क्या यह इस बात का सूचक नहीं है कि दक्षिण भारतीय अच्छी हिन्दी जानते हैं और वक्त-बेवक्त हिन्दी में गपशप भी कर सकते हैं। जहां तक तमिलनाडु का सवाल है, उसके बारे में भी भ्रांति ही ज्यादा है। वहां भी उतना हिन्दी विरोध नहीं है, जितना सोचा जाता है। दरअसल **बद अच्छा बदनाम बुरा** वाली कहावत इस राज्य के मामले में अक्षरशः सत्य है। अवारा से लेकर लक्ष्य तक तमाम फिल्में दक्षिण भारत में रिलीज हुई है, देखी गई हैं, सराही गई हैं। दक्षिण भारतीयों के हिन्दी ज्ञान के लिए और क्या सबूत चाहिए ?

वास्तव में, दक्षिण भारत में हिन्दी मुख्य भाषा के रुप में तो नहीं, पर पूरक भाषा के रुप में संवाद का माध्यम बन चुकी है। यदि कहीं कोई समस्या है तो वह है - सरकारी दफ्तरों में और सायबर संस्कृति में, जहां हिन्दी, अंग्रेजी की दासी के रुप में पेश की जा रही है।

यूँ तो अनुच्छेद ३४३ (१) में हिन्दी को संघ की भाषा बनाया गया है। फिर इसे गति देने के लिए राजभाषा अधिनियम १९६३ बनाया गया है। पर इन कागजी घोड़ों के दौड़ाने के बावजूद हिन्दी का घोड़ा, क्षिप्र गति से ही आगे बढ़ रहा है। वेस्ट मिनिस्टर संसदीय व्यवस्था पर लगातार हावी रहा है। मुझे इस बात से कतई गिला-शिकवा नहीं है कि अंग्रेजी क्यों पढ़ी-पढ़ाई जा रही है। अतः अंग्रेजी देशवासियों के लिए ज्ञान की खिड़की खोलती है, उन्हें ज्यादा सोचना-समझने का अवसर प्रदान करती है। दुनिया भर के लोगों से संवाद का माध्यम है अतः अंग्रेजी पढ़ी-पढ़ाई जानी चाहिए।

भारत, रुस, कनाडा जैसे विशाल और बहुभाषी देशों की अपनी भाषाई समस्याएँ हैं। पेरेस्गाइका और

ग्लासनोस्त के पूर्व वाले वर्ष में तत्कालीन सोवियत संघ में ढेर सारी भाषाएं बोली जाती है। कनाडा में आज भी फ्रेंच व अंग्रेजी दोनों बोली-समझी जाती है। पर जब अंग्रेजी, हिन्दी को प्रतिस्थापित कर ऊँचे सिंहासन पर बैठने लगती है तो आत्म ग्लानि होने लगती है। मलयालम के प्रसिद्ध कवि वल्लतोल नारायण मेनन के अनुसार मातृभाषा माँ होती है तो अन्य भाषा मौसी, मौसी अच्छी तो होती है पर माँ का स्थआन कदापि नहीं कर सकती।

विश्व की एक समृद्ध भाषा के रुप में अंग्रेजी निःसंदेह रुप से आदर की पात्र है, पर भारतीयों के मानसिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक व न्याययिक हितों के रुप में वह भारतीयों की भाषा कदापि नहीं बन सकती और अंग्रेजी को लगातार इतना ऊंचा स्तर दिया जाता रहा तो वह जनतंत्र के अवमूल्यन के अलावा कुछ नहीं है।

भारत, रुस, कनाडा जैसे विशाल और बहुभाषी देशों की अपनी भाषाई समस्याएं है। पेरेस्काइका और ग्लासनोस्त के पूर्व वाले वर्षों में तत्कालीन सोवियत संघ में ढेर सारी भाषाएं बोली जाती है। कनाडा में आज भी, फ्रेंच व अंग्रेजी दोनों बोली-समझी जाती है। पर इन देशों ने दूसरों की भाषा नहीं अपनाई। अपनी ही भाषा को पल्लवित, पुष्पित, विकसित कर महाशक्ति के रुप में तब्दील हुए हैं। तो भारत में क्या परेशानी है? शायद कमी है धुन की, जुनून की, इच्छाशक्ति की। एक अंग्रेजी भाषी अल्पसंख्यक वर्ग, बहुसंख्यक वर्ग पर अपनी सत्ता जमाए रखने के लिए अंग्रेजी को लाठी की तरह इस्तेमाल कर रहा है और हिन्दी वाले निरीह भेड़-बकरियों की तरह धकियाए जा रहे हैं, हड़काए। दरअसरल, प्रजातंत्र के तीनों अंगों यानी कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका में हिन्दी की अवहेलना हो रही है। न सांसद हिन्दी बोलते हैं, न नौकरशाह, बोलते भी हैं तो **ललुआ हिन्दी** जिसको सुनकर अपनी भाषा पर गर्व कम होता है, हँसी ज्यादा आती है। न्यायपालिका की स्थिति तो और भी ज्यादा बदत्तर है। वहां वालों ने तो शायद हिन्दी से कट्टी कर ली है।

न्यायपालिका में तो कभी-कभी यह स्थिति हो जाती है कि वादी और प्रतिवादी दोनों को अंग्रेजी नहीं आती है, पर जिरह अंग्रेजी में होती है। क्या इस हालत में अपराधी अपना बचाव कर पाएगा? और यदि वह नहीं कर पाता है तो यह जनतंत्र का निषेध नहीं तो क्या है? दरअसल, हिन्दी और स्थानीय भाषाओं की सबसे ज्यादा जरुरत है तो वह न्याय के क्षेत्र में है क्योंकि यदि हम अपराधी को पूरी प्रक्रिया समझाकर उसे अपना पक्ष रखने ही नहीं दे रहे हैं तो न्याय व्यवस्था का मतलब ही क्या रह जाएगा और कोई व्यक्ति अपना पक्ष जब ही रख सकता जब न्यायिक प्रक्रिया हिन्दी या क्षेत्रीय भाषाओं में हो, अन्यथा अंग्रेजी की बीन बजती रहेगी और निर्दोष मुर्गे हलाल होते रहेंगे।

भारतीय भाषाओं की रस्साकसी के बीच अंग्रेजी बंदर का काम अंजाम दे रही है। बेलगांव में मराठी और कन्नड़, खींचतान करती है तो रायचूर में तेलगू और कन्नड़। कहीं पंजाबी और हिन्दी की खींचतान है। स्वाभाविक ही, दो पड़ोसी बिल्लियों के झगड़े में सबसे ज्यादा भला अंग्रेजी का हो रहा है। वह लगातार **देशी रोटी** को **विदेश केक** में बदलने के लिए आतुर है।

भारत की राजभाषा अधिनियम भले ही यह कहता हो कि कार्यालयीन हिन्दी सरल, सहज, आम बोलचाल की भाषा होना चाहिए पर ऐसा नहीं हो रहा है। सरकारी हिन्दी इतनी क्लिष्ट है कि कई बार समझने के लिए हिन्दी भाषियों को भी शब्दकोश का सहारा लेना पड़ता है।

कुल मिलाकर हिन्दी की अवमानना, अवहेलना के कारण हिन्दी अपने घर में ही दासी बन गई है। भले ही रुस, जापान, अमेरिका के कुछ विश्वविद्यालयों में इसके पठन-पाठन के बावजूद इसकी स्थिति शोचनीय है। तब हमारे लोकतंत्र के महत्वपूर्ण पक्ष को शनैः-शनैः अंग्रेजी चूहे कुतरते जा रहे हैं। यदि ऐसा होता रहा तो लोकतंत्र की चूलें हिलने में देर नहीं लगेगी। सिर्फ भाषा ही नहीं, लोकतंत्र भी रसातल में जाने लगेगा। जरुरत है हिन्दी को पल्लवित, पुष्पित करने के लिए सामूहिक जिम्मेदारी की। यदि हम ऐसा नहीं कर सकते हैं तो हर साल १४ सितंबर को हिन्दी दिवस मनाने का कोई अर्थ नहीं होगा। मानस भवन में उतारें आरती, हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि हो नागरी।

दैवी सम्पदा के आदर्श प्रतिमान

डॉ. भवानीलाल भारतीय

जन्माष्टमी पर विशेष

योगेश्वर श्रीकृष्ण

भगवद्गीता में भगवान् कृष्ण ने दैवी सम्पदा के अन्तर्गत आने वाली जिन विभूतियों का उल्लेख किया है, वे उनमें साक्षात् मूर्तिमान थीं। गीता में ही उनका कथन है कि श्रेष्ठ पुरुष जैसा आदर्श आचरण करते हैं, जन सामान्य भी उसी का अनुकरण करता है। समाज के ज्येष्ठ और वरिष्ठ व्यक्तियों के द्वारा जो आदर्श प्रामाणिक और आचरणीय समझे जाते हैं, सर्व सामान्य वैसा ही वर्तन करता है। पांच हजार वर्ष पूर्व ठीक आपकी ही तरह विश्वक्षितिज पर अंधेरी तमिस्रा अपनी निगूढ़ कलिका के साथ छा गई थी। तब भी भारत में जन का, धन का, शक्ति की, साहस का पर एक प्रकार की अकर्मण्यता और कर्त्तव्य च्युति भी थी जिससे समस्त वातावरण तमसाच्छन्न तथा मोहमिभूत था। ऐसे निराशमय वातावरण में लोक, नीति और अध्यात्म का समन्वय सूत्र तलाश कर '**कर्मण्येवाधिकारस्ते या फलेषु कदाचन**' का पाञ्चजन्य फूंकने वाले भगवान् कृष्ण का लोकोत्तर जीवन हम सबके लिए आदर्श है।

दैवी सम्पदा युक्त पुरुषों में भी पृथक-पृथक गुण तथा विशिष्टताएँ पाई जाती है। कोई धर्म संस्कारक होता है तो कोई स्वराज्य स्रष्टा। कोई परम निःस्कृह परिवार का पद प्राप्मत कर मानव समाज के व्यापक हित के लिए सर्वत्र विचरण करता है तो कोई अन्य विचक्षण राजनीतिज्ञ की भूमिका में आता है। भारत की पुण्यभूमि में द्वापर और काल की संधि बेला में अवतरित होने वाले वासुदेव कृष्ण ही ऐसे लोकोत्तर व्यक्तित्व के धनी थे जिनमें लोकादर्शों की पूर्ण प्रतिष्ठा तथा आर्य चरित्र का चरण उत्कर्ष दिखाई दिया था। अतः विश्व के दिव्य विभूति सम्पन्न चरित्रों में उन्हें मूर्धन्य कहें तो अनुचित नहीं होगा। गुजरात के महान् साहित्यकार चिन्तक तथा लेखक कन्हैयालाल मणिकलाल मुन्शी के शब्दों में इतिहास की रंगभूमि पर जब ऐसे लोकोत्तर चरित्र वाले अन्तरित होते हैं। तब दूसरे तत्व पुरुषार्थ विहीन हो जाते हैं - "**इतिहास क्रम रुक जाता है। समय शक्तियों का मान भूल कर दर्शकों का मोह उसके आसपास लिपट जाता है। अतीत की रंगभूमि पर अनेक ऐसे पुरुषों का अवतरण हुआ है - शास्त्र और शास्त्र के समन्वित आदर्श परशुराम, मधुसूदन भगवान् कृष्णा तथा समस्त जगत् के राजनीतिज्ञ शिरोमणि भगवान् चाणक्या**" (गुजरात नो नाथ पृ. १३७)

आर्य आदर्शों का सर्वांगीण निर्वाह हमें कृष्ण चरित्र में दिखाई देता है। जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं था जिसमें उन्हें सफलता न मिली हो। राजनीति और समाज नीति, धर्म, दर्शन और अध्यात्म सभी क्षेत्रों में उन्होने अद्वत मेधा तथा प्रतिभा का प्रदर्शन किया। एक ओर वे महान् राजनीतिज्ञ, क्रान्ति विधाता तथा धर्म पर आधारित नवीन साम्राज्य के स्रष्टा के रुप में दिखाई देते हैं तो दूसरी ओर धर्म तथा दर्शन के सूक्ष्मतत्वों के विवेचक और उपदेश की भूमिका में। उनके समाज में भारत देश गांधार से लेकर सह्यादि पर्वत माला तक क्षत्रिय शासकों के छोटे-छोटे स्वतंत्र किन्तु निरंकुश राज्यों में विभक्त हो चुका था। इनकी अराजक वृत्तियों पर अंकुश लगाकर उन्हें एक सुसंगठित राष्ट्र की इकाई के रुप में बदलने की सामर्थ्य किसी में नहीं थी। एक चक्रवर्ती सार्वभौम सम्राट की अनुपस्थिति में विभिन्न आणुलिक नरेश नितान्त स्वेच्छाचारी तथा प्रजापीड़क हो गये थे। मथुरा का कंस, मगध का जरासंध, चोटि देश का शिशुपाल तथा हस्तिनापुर के कौरव, सभी दुष्ट विलासी तथा दुराचारी थे। कृष्ण ने अपनी अद्बुतचातुरी, नीतिमत्रा तथा कूटनीतिज्ञता से इन सभी अनाचारियों का मूलोच्छेद कर धर्मराज का विरुद धारण करने वाले युधिष्ठिर के नेतृत्व में, आर्यावर्त में अखण्ड चक्रवर्ती, सार्वभौम आर्य साम्राज्य की स्थापना की। जिस प्रकार वे साम्राज्य स्रष्टा तथा नवयुग प्रवर्तक के रुप में प्रतिष्ठित हुए,

उसी प्रकार अध्यात्मज्ञाता तथा तत्वचिन्तक के रुप में उनकी प्रवृत्तियां चीमोत्कर्ष पर पहुंच गई थी। सुख और दुःख में अनुद्विग्र, वीतराग, जल में रहने वाले कमल पत्र की भांति निर्लेप स्थित यज्ञ व्यक्ति का चित्रण उन्होंने गीता में किया है-

दुःखेषु अनुद्विग्न मनाः सुखेषु विगत स्पृहः।
वीतराग भयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ।।

उसके मूर्त उदाहरण वे स्वयं थे। प्रवृत्ति और निवृत्ति, क्रोध और प्रेम, ज्ञान और कर्म, ऐच्छिक और आमुणिक आदि आपाततः विरोधी दीखने वाली प्रवृत्ति का अपूर्व सामञ्जस्य कृष्ण के उदात्त चरित्र की विशेषता है। उन्होंने धर्म के दोनों आर्देशों - अभ्युदय और निःश्रेयस सिद्धि (यतोभ्युदय निःश्रेयस सिद्धि स धर्मः वैशेषिक दर्शन १/१/२) को अपना जीवनदर्श बनाया तथा उसे प्राप्त भी किया।

तत्कालीन सामाजिक तथा लौकिक परिस्थितियों के प्रति वे सदा जागरुक रहे। उन्होंने पतनोन्मुख समाज को उद्बोधन किया। स्त्रियों, वैश्यों तथा शूद्र वर्ग को समुचित सम्मान दिलवाया। मुमुर्षुदशा को प्राप्त तथा विश्रृंखलित वर्णव्यवस्था के पुनरुद्धार की और उनका ध्यान था। चातुर्वण्यं मयासृष्टं गुणकर्म विभागशः की घोषणा करने वाले भगवान् कृष्ण ने सामाजिक विषमताओं तथा अव्यवस्था को दूर किया। कथित निम्न वर्ग के लोगों को समाज में यथोचित सम्मान मिलें, इसके लिये वे सतत् प्रयत्नशील रहे। उनके युग में वर्ण साङ्कर्य का बोलबाला था। द्रोणाचार्य जैसे शस्त्र और शास्त्र में ब्राह्मण कुरुवंशीय राजकुमारों को शिक्षित करने के लिए मात्र जीविका के लिये गुरुकुल को छोड़ कर राज प्रासाद में में आ गये थे। क्षत्रिय कुमारों को पने अभिजात कुलों में उत्पन्न होने का बड़ा गर्व था। गुरुवंशीय राजकुमारों की शास्ज्ञस्य प्रतियोगिता में भीम द्वारा सूत्रपूत्र होने के कारण कर्ण का अपमान किया जाना आगे चल कर किस भंयकर परिस्थिति का कारण बना, यह महाभारत के पाठकों को आबंटित नहीं है। भीम द्वारा किये गये जन्म को लेकर इस अपमान से प्रपीड़ित कर्ण ने जो उद्‌गार व्यक्त किये उन्हें नाटककार भट्ट नारायण ने इस श्लोक में व्यक्ति किया है

"सूतो का सूत पुत्रों वा दो वा कोवा भवाम्यदम्।
दैवायत्रं कुले जन्म यदायत्त तु पौरुषम्।।" वेणीसंहार

मैं चाहे सूत हूँ या सूत पुत्र, जो कुछ भी हूँ। ध्यान रहे किसी कुल विशेष में जन्म लेना दैवाधीन है। मेरे अधीन तो मेरा पौरुष है। क्षत्रिय कुमारों की नाराजगी से परेशान द्रोणाचार्य ने एकलव्य जैसे शस्त्र विद्या सीखने के लिए लालायित छात्र की जिज्ञासा वृत्ति को कुण्ठित किया। साधारण जनों की तो बात ही क्या, विद्या बुद्धि और आयु में वृद्ध पितामह भीष्म भी स्वयं को अर्थ का दास कह कर अन्याय का पक्ष लेते दिखाई देते हैं। उनकी निम्न उक्ति से स्पष्ट हो जाता है कि आर्थिक दृष्टि से परतंत्र मनुष्य स्वविवेक को खोकर न्यायाचरण को छोड़ बैठता है -

अर्थस्य पुरुषोदासो दास्त्वर्मोन कस्यचित्।
इति मत्वा महाराज बद्धोस्मर्थेन कौरवै ।। महाभारत

समाज में व्याप्त नैतिक मूल्यों के इस ह्रास, धर्म, नीति और सदाचार के सार्वात्रिक पतन को देखकर वासुदेव कृष्णा ने उसमें लाने का प्रयास किया। दुःखी, शोषित तथा प्रताड़ित वर्ग के प्रति उनमें अशेष संवेदना तथा सहानुभूति थी। यादव कुल में उत्पन्न होकर भी बाल्यकाल में वे गोप वंशीय आमीरों के सखा रहे। सुदर्शन चक्रधारी अद्वितीय वीर होकर भी उन्होंने पार्थ सारथी बनने में गर्व माना। समाज के पिछड़े, अभिशप्त तथा त्रिलाप सन्तप्त जन समाज के प्रति उनमें अशेष सहामुभूति थी। दुर्योधन के राजसी आतिथ्य के प्रलोभन को ठुकरा कर उन्होंने नीति निपुण विदुर का आतिथ्य स्वीकार किया। भीष्म ने उन्हें वेद, वेदांग और विज्ञान का ज्ञाता तथा अद्वितीय बल का धनी बताया। उनका कहना था समकालीन मनुष्य लोक में केशव से विशिष्ट अन्य कोई नहीं है। गीता के प्रवक्ता महामति संजय की घोषणा थी -

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धाः।
तत्र श्रीविजयोभूतिर्धुवा नीतिर्मतिमम ।। १८/७८

आचार्य द्रोण ने **यतो धर्मस्ततः कृष्णो यतः कृष्णास्ततो जप** (भीष्म पर्व ४३/६०) का उद्घोष कर उन्हें धर्म का पर्याय बताया। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने उन्हें महान् धार्मिक तथा आर्य आदर्शों का प्रतिमान बताया। बकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, लाला लाजपतराय तथा पं. चमूपति जैसे विद्या बुद्धि विशारदों ने कृष्णा के महनीय चरित्र को ग्रन्थबद्ध कर स्वयं की लेखनी को धन्य किया।

पर्व प्रेरणा

विश्वकर्मा और वेद

१७ सितम्बर विश्वकर्मा जयंती पर विशेष

- आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी

वैदिक वाङ्मय में विश्वकर्मा शब्द का व्यापक अर्थ है। यह शब्द गुणवाचक है व्यक्तिवाचक नहीं। अतः इस शब्द से किसी निश्चित विश्वकर्मा का ज्ञान न होकर अनेक विश्वकर्माओं का ज्ञान न होकर अनेक विश्वकर्माओं का ज्ञान होता है। तद्यथा - सृष्टि रचयिता परमपिता परमात्मा, शिल्पशास्त्र के आविष्कर्त्ता व सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता ऐतिहासिक महापुरुष विश्वकर्मा तथा सूर्य, वायु, अग्नि, पृथिवी व वाणी आदि जड़ चेतन रुप में अनेक विश्वकर्मा हैं।

विश्वकर्मा वेद का शब्द है। यह वेद से लेकर ही लोक में प्रयुक्त हुआ। वेद के सभी शब्द यौगिक है अथवा योगरुढ़ि किन्तु कोई भी शब्द वेद में रूढ़ि नहीं है। वेद के प्रत्येक शब्द का अर्थ उस शब्द के अन्दर ही निहित है उसे समझने के लिए हमें उस शब्द के अन्दर प्रविष्ट होना पड़ेगा। शब्द के अन्दर प्रविष्ट होकर उसके धातु, प्रत्यय का विभाग करके स्वाभाविक मूल अर्थ को जानने का नाम ही यौगिक प्रक्रिया है। वेदसम्मत इस यौगिक प्रक्रिया से शब्द का जो अर्थ जाना जाता है वह वास्तविक व अपरिमित होता है। इसके विपरीत वेद के शब्द लोक में प्रयुक्त होने पर जब अपने वास्तविक शब्द से हटकर किसी भी निश्चित किए गए अन्य अर्थ में रूढ़ हो जाते हैं तब उन्हें रूढ़ि शब्द कहते हैं। उदाहरण के लिए एक लोक प्रसिद्ध शब्द पंकज का यौगिक अर्थ करने पर पंक अर्थात् कीचड़ में उत्पन्न होने वाले पौधे कमल आदि सभी को ग्रहण होता है किन्तु यदि यही पंकज नाम किसी व्यक्ति अथवा वस्तु का रख दें तो यह शब्द रूढ़ि ही कहलाएगा और अपने वास्तविक स्वाभाविक अर्थों को छोड़कर किसी निश्चित किए हुए व्यक्ति अथवा वस्तु के लिए संकुचित अर्थ में रुढ़ हो जाएगा। वेद का विश्वकर्मा का वाचक न होकर यौगिक प्रक्रिया से अपने स्वाभाविक अर्थ द्वारा सृष्टिरचयिता परमपिता परमात्मा व उसके द्वारा रचित, सूर्य, वायु, अग्नि आदि वैदिक पदार्थों का बोध कराता है।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है। परमेश्वर सृष्टि के आरम्भर में जैसे कोई वादित्र=बाजा बजाए या कठपुतली को चेष्टा कराये ठीक उसी प्रकार अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा नामक चार ऋषियों को साधन बनाकर सब मनुष्यों के हितार्थ अपने ज्ञान ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद का प्रकाश करता है। प्रभु वेदों का यह ज्ञान प्रत्येक सृष्टि के आरम्भ में ठीक इसी प्रकार का देता रहा है व सदैव देता रहेगा। उसमें कभी किञ्चित् परिवर्तन नहीं करता। इस नित्य ज्ञान वेद में देश काल आदि से सीमित किसी व्यक्ति, स्थान या इतिहास का वर्णन नहीं है। यदि वेद का ज्ञान सार्वकालिक अनादि व अनन्त है और महापुरुष उत्पत्ति व मरणधर्मी हैं तो नित्यज्ञान वेद में अनित्य महापुरुषों की कथा कैसे सम्भव है ? अतः हमें दशरथनन्दन राम, योगिराज कृष्ण व शिल्पशास्त्र के ज्ञाता विश्वकर्मा आदि महापुरुषों का मानवीय इतिहास इतिहासादिक ग्रन्थों में ही ढूंढना चाहिए वेद में नहीं।

वेद के विश्वकर्मा शब्द से ज्ञात परमपिता उसके द्वारा रचित सूर्य, वायु, अग्नि आदि विश्वकर्मा व ऐतिहासक महापुरुष शिल्पशास्त्र के ज्ञाता विश्वकर्मा, ये समस्त ही विश्वकर्मा हमारे जिज्ञास्य हैं हम इन्हें जानने का समुचित प्रयत्न करें। निरुक्तकार महर्षि यास्क विश्वकर्मा शब्द यौगिक अर्थ लिखते हैं - **'विश्वानि कर्माणि येन यस्म वा स विश्वकर्मा, विश्वकर्मा सर्वस्य कर्त्ता'** जगत् के सम्पूर्ण कर्म जिसके द्वारा सम्पन्न होते हैं अथवा सम्पूर्ण जगत् में जिसका कर्म है वह सब जगत् कर्ता विश्वकर्मा है। विश्वकर्मा शब्द के इस यथार्थ अर्थ के आधार पर विविध कला कौशल के आविष्कारक यद्यपि अनेक विश्वकर्मा सिद्ध हो सकते हैं तथापि सर्वाधार सर्वकर्ता परमपिता परमात्मा ही सर्वप्रथम विश्वकर्मा है। ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ के मतानुसार **'प्रजापतिः प्रजाः सृष्ट्वा विश्वकर्माऽभवत्'** प्रजापति परमेश्वर प्रजा को उत्पन्न करने से सर्वप्रथम विश्वकर्मा है। वेद में परमेश्वर के

विश्वकर्तृत्व का अद्भूत व मनोरम चित्रण विश्वकर्मा नाम लेकर अनेक स्थानों पर किया गया है। सृष्टि का मुख्य निमित्त कारण परमात्मा ही है। वही सब सृष्टि को प्रकृति से बताता है जीवात्मा नहीं है। इस कारण सर्वप्रथम विश्वकर्मा परमेश्वर है। परमेश्वर ने जगत् को बनाने की सामग्री प्रकृति से सृष्टि की रचना की है एतद्विषयक निम्नलिखित मन्त्र द्रष्यव्य है - **किं स्विदासीदाधिष्ठानमारभ्भणं कतमत्स्वित्कथासीत्। यतो भूर्मि जनयन्विश्वकर्मा वि द्यामौर्णोन्महिना विश्वचक्षाः** ॥ ऋ. १०/८१/२

अर्थात् जगत् को उत्पन्न करने में कौन सा अधिष्ठान था, इसे आरम्भ करने का कौन सा मूल उपादानकारण जगत् को बनाने की सामग्री थी कि जिससे विश्वकर्मा परमेश्वर ने भूमि और द्यौलेक को अत्यन्त कौशल से उत्पन्न किया। सर्वद्दष्टा परमेश्वर ही अपने महान् ज्ञानमय सामर्थ्य से प्रकृति को गति देकर विकसित करके सृष्टि की रचना करता है। उसके विश्वकर्मत्व को देखकर बड़े-बड़े विद्वान आश्चर्य करते है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी परमेश्वर की सृष्टि रचना का वर्णन सत्यार्थ प्रकाश में निम्नलिखित शब्दों में करते हैं - देखों ! शरीर में किस प्रकार की ज्ञान पूर्वक सृष्टि रची है कि विद्वान लोग देखकर आश्चर्य मानते हैं। भीतर हाड़ों का जोड़, नाड़ियों का बन्धन, मांस का लेपन, चमड़ी का ढक्कन, प्लीहा, यकृत, फेफरा, पंखा कला का स्थापन, जीव का संयोजन, शिरोरुप मूल रचन लोग नखादि का स्थापन, आंख की अतीव सूक्ष्म शिरा का तारवत् ग्रन्थन, इन्द्रियों के मार्गों का प्रकाशन, जीव के जागृत, स्वप्न, सुषप्ति अवस्था भोगने के लिए स्थान विशेषों का निर्माण, सब धातु का विभागकरण, कला, कौशल स्थापनादि अद्भूत सृष्टि को बिना परमेश्वर के कौन कर सकता है ? इसके बिना नाना प्रकार के रत्न धातु से जड़ित भूमि, विविध प्रकार के वटवृक्ष आदि के बीजों में अतिसूक्ष्म रचना, असंख्य हरित, श्वेत, पीत कृष्ण चित्र मध्यरुपों से युक्त पत्र, पुष्प, फल, अन्न, कन्द मूलादि रचन, अनेकानेक करोड़ों भूगोल, सूर्य चन्द्रादि लोक निर्माण, धारण, भ्रामण, नियमों में रखना। आदि परमेश्वर के बिना कोई नहीं कर सकता। इस प्रकार वेद व सृष्टि की रचना का अद्भूत सामर्थ्य केवल परमेश्वर का है इसलिए सर्वप्रथम विश्वकर्मा वहीं है। परमेश्वर के अनन्त गुण, कर्म, स्वभाव होने से उसके विश्वकर्मा नाम की भांति सच्चिदानन्द स्वरुप, निराकार सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु व सृष्टिकर्त्ता आदि अनन्त नाम हैं किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है यह ध्यान रखना चाहिए।

विश्वकर्मा परमेश्वर ने जगत् में अनेक पदार्थ रचे हैं। उन पदार्थों में परमेश्वर ने जितने-जितने दिव्यगुण स्थापित किए हैं उतने-उतने ही दिव्यगुण हैं न उससे अधिक और न न्यून। उन दिव्य गुणों के द्वारा विश्व में अपना-अपना कर्म करने से अग्नि, सूर्य आदि जब पदार्थ भी विश्वकर्मा कहलाते हैं। शतपथ ब्राह्मणग्रन्थ में **'विश्वकर्मायमग्निः'** वाक्य से अग्नि को विश्वकर्मा कहा है। गोपथ में **'असौ वै विश्वकर्मा योऽसी सूर्यः तपति'** कहकर विश्व को प्रकाशित करने के कर्म से सूर्य को विश्वकर्मा कहा है। वैदिक साहित्य में इसी प्रकार से वायु, पृथिवी व वाणी आदि तीनों लोकों के अनेक दैविक पदार्थों को विश्वकर्मा शब्द से व्यक्त किया गया है। हमें इन पदार्थों के दिव्य विश्वकर्मत्व को जानकर विद्या, विज्ञान की वृद्धि करनी चाहिए। सृष्टि के आरम्भकाल में मनुष्य के पास नामकरण के कोष के रुप में केवल वेद थे।

५ सितम्बर शिक्षक दिवस पर

हे शिक्षक तुम्हें प्रणाम

हे शिक्षक तुम्हें नमन
महान हो तुम, गुणगान हो तुम,
ज्ञान की सदा से खान हो तुम।

जल से निर्मल, पुष्प से कोमल,
शिष्यों के भाग्य विधाता हो तुम।

नदियों से पावन, पर्वतन से ऊंचे,
सूरज जैसे तेजस्वान हो तुम।

सागर से गंभीर, हृदय से कोमल,
ज्ञान की गंगा और भंडार हो तुम।

इस जग में तुम सा कोई नहीं,
संपूर्णता का वरदान हो तुम।

- आशीष महते

५ सितम्बर पर विशेष

शिक्षक दिवस का महत्व

- राजश्री कासलीवाल

'शिक्षक दिवस' कहने-सुनने में तो बहुत अच्छा प्रतीत होता है। लेकिन क्या आप इसके महत्व को समझते हैं। शिक्षक दिवस माने साल में एक दिन बच्चों द्वारा टीचर्स को भेंट किया गया एक गुलाब का फूल था कोई भी गिफ्ट। नहीं यह टीचर दिवस मनाने का सही तरीका नहीं है।

टीचर्स-डे हम सभी मनाते आए हैं। आपने भी मनाया है। हमने भी मनाया है। लेकिन इस दिन को मनाना तभी सही मायने में सार्थक सिद्ध होगा, जब आप अपने टीचर के प्रति सही नजरिया रखें। पिछले कुछ ही समय में ऐसी कई घटनाएं देश और दुनियां में घटी है जो आपके व्यवहार, वातावरण और संस्कारों के अनुरुप नहीं है। चाहे वह घटना सभरवाल कांड हो या फिर किसी शिक्षक द्वारा भरी क्लास में या एकांत में स्कूली छात्रा के कपड़े का नाप लेना हो। या फिर किसी शिक्षक द्वारा बच्चे के कपड़े उतारकर उसे दंडित करना हो।

सब बातें हमें किस ओर इंगित करती है। यह समझना आज बहुत जरुरी हो गया है। या तो शिक्षक वो शिक्षक नहीं रहे जो अपने छात्रों को वह सही संस्कार दे सकें। या फिर आजकल के शिक्षकों में अहंकार, अत्याचार, ईर्ष्या और द्वेष का भाव बहुत ज्यादा मात्रा में आ गया है। यह सब मैं इसलिए नहीं कह रही हूं कि मैं शिक्षकों का आदर करना नहीं जानती, या फिर मैं शिक्षकों के खिलाफ हूँ।

बात ऐसी नहीं है.. रोज़ाना हमारे आमने-सामने, हमारे आस-पास घटित होने वाली उन घटनायें सोचने पर मजबूर कर दिया है कि आखिर ये सब हो क्या रहा है ? क्या किसी भी छात्र संगठन के छात्रों द्वारा शिक्षकों को अपमानित करना, उनके साथ मारपीट करना ये वाक्या किस हद तक सही है। अभी हाल ही में एक स्कूल १०वीं. ११वीं के छात्र ने अपने टीचर की जमकर धुनाई कर दी थी। उस छात्र ने ऐसा क्यों किया, यह सोचना भी एक बहुत बड़ा पहलू है। अगर हम मान भी लेते हैं कि हो सकता है, उस बच्चे की कोई मजबूरी रही हो, या उस बच्चे को गुस्सा बहुत ज्यादा आता हो तो शिक्षक द्वारा कही गई बातों का, शिक्षक द्वारा उस छात्र के साथ किए गए व्यवहार से आहत होकर उस बच्चे ने इतना घिनौना कदम उठाया। बात जो भी हो, लेकिन तरीका तो गलत ही हुआ।

शिक्षक को हम विद्या का वरदान देने वाले भगवान का दर्जा देते हैं। उनके प्रति हमारे मन में असीम प्यार और स्नेह छुपा होता है। तो फिर छात्र द्वारा अपने शिक्षक के साथ किया गया यह व्यवहार कैसा ? क्या आजकल के बच्चों को स्कूलों में सही शिक्षा, सही वातावरण नहीं मिल रहा है या फिर आपके घर के संस्कारों में कुछ कमी है। जो आप जरा-जरा सी बात पर मरने-मारने पर उतारूं हो जाते हैं।

अगर आप शिक्षक दिवस का सही महत्व समझना चाहते हैं तो सर्वप्रथम आप इस बात को हमेशा ध्यान में रखें कि आप एक छात्र है और अपने शिक्षक से उम्र में काफी छोटे हैं और फिर हमारे संस्कार भी तो हमें यही सिखाते हैं कि हमें अपनों से बड़ों का आदर करना चाहिए। अपने गुरु का आदर-सत्कार करना चाहिए। उनकी बात को ध्यान से सुनना और समझना चाहिए। अगर आपने अपने क्रोध, ईर्ष्या को त्याग कर अपने अंदर संयम के बीज बोएँ तो निश्चित ही आपका व्यवहार आपको बहुत ऊँचाईयों तक ले जाएगा और तभी हमारा शिक्षक दिवस मनाने का महत्व भी सार्थक होगा।

आरोग्य स्वास्थ्य का महान शत्रु - अण्डा

हरियाणा सरकार द्वारा आंगनबाड़ी केन्द्रों में बच्चों को अण्डा परोसना बहुत ही कुत्सित निन्दनीय विवेकहीन एवं धार्मिक भावनाओं आस्थाओं पर कुठाराघात है। किसी भी समाज की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने का क्या अधिकार है ? किसी भी सामूहिक स्थान पर सभी बच्चों का शाकाहार के स्थान पर मांसाहारी बनाने का भारतीय संविधान की किस धारा में उल्लिखित है। धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ करने का क्या अधिकार है? यदि पौष्टिक भोजन ही देना है तो स्वास्थ्यवर्धक दूध, फल, मेवे आदि क्यों नहीं दिए जा रहे हैं ? दूध स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभकारी अमृत तुल्य तथा किसी की भी भावना को ठेस न पहुंचाने वाला पौष्टिक पदार्थ है।

धन्य है दिगम्बर जैन समिति जिन्होने इस कुत्सित दुष्कृत्य का विरोध करने का निर्णय लेकर आत्मबल एवं साहस का परिचय दिया है तथा आंगनबाड़ी केन्द्रों में अण्डा परोसे जाने के कार्यक्रम को निरस्त करने की मांग की है। सरकार के साथ धिक्कार है उस आर्यसमाज को उस सनातन धर्म सभा को उन हिन्दू धार्मिक संगठनों को उन सन्यासियों को उन शंकराचार्यों को जो केवल मठों में बैठकर ऐश्वर्य का जीवनयापन कर रहे हैं। तथा भौतिकता की चकाचौंध में दिवान्ध हो करके तथा भोग विलासिता में लिप्त होकर वैदिक धर्म की आस्थाओं पर किये जा रहे दिन-प्रतिदिन कुठाराघातों पर मौन हैं, जबकि सभी जानते हैं कि जैसा भोजन होगा वैसी ही विचारधारा तथा मन होगा।

सभी जानते हैं कि अण्डा भक्ष्य पदार्थ नहीं है, अभक्ष्य एवं त्याज्य तथा तामसी है किन्तु आज के बुद्धिजीवी भोली-भाली जनता को कुतर्क देकर अंडे को शाकाहारी बताकर स्वास्थ्य के लिए लाभकारी बता रहे हैं जबकि स्वास्थ्य के लिए अण्डे से बड़ा कोई शत्रु नहीं है तरस आता है उन बुद्धिजीवियों की तामसी बुद्धि पर जो अण्डे को शाकाहारी बताकर युवाओं को दिग्भ्रमित कर रहे हैं। अण्डा किस वृक्ष पर, किस लता पर, किस खेत से पैदा होता है ? क्या आकाश से गिरता है ? जो शाकाहारी अथवा फल हुआ। सभी जानते है कि मुर्गी दूषित पदार्थ कीड़े-मकोड़े, मल आदि का सेवन करती है। फार्मों में मुर्गियों को हड्डियाँ, रक्त, मल, मृत मुर्गों का मांस, मछली तथा अन्य पशुओं की गंदगी खिलाते हैं तथा अधिकतर पोल्ट्रिया में मछली के भोजन दिये जाते हैं। यदि यह भी मान लिया जाय कि मुर्गियों को केवल अनाज ही दिया जाता है तो भी क्या वो सब्जी हो जाएँगी? एक भैंस, बकरी आदि घास खाती है। क्या उसका मांस-शाकाहारी है ? क्या मुर्गे को शाकाहारियों द्वारा खाया जाता है ? जो अंडे खाने वाले शाकाहारी अपने को भ्रम में रखे हुए हैं, उन्हें सबसे पहले उन तथ्यों को जानना चाहिए कि मुर्गी किस तरह एक अण्डा देती है।

- डॉ. हर्षवर्धन शर्मा

सबसे स्पष्ट उत्तर तो यही है कि अण्डा-मुर्गी से निकलता है यह किसी बैगन के पौधे अथवा आम के वृक्ष से नहीं निकलता है यह मुर्गी के यौन अंगों से निकलता है इसलिए अण्डा शाकाहार नहीं है सच्चाई यह है कि अण्डा मुर्गियों के मासिक धर्म का रक्त होता है यदि उन्हें सेका जाय तो अण्डे से मुर्गा, मुर्गी की ही उत्पत्ति होगी न कि बैगन अथवा आम के फलों की तथा बादाम काजू आदि पौष्टिक पदार्थों की। कुछ महानुभाव अण्डे खाने में जीव हत्या भी नहीं समझते है अण्डा स्वास्त्य का महान शत्रु है। अण्डा खाने से पाचन तन्त्र में सड़न उत्पन्न हो जाती है जिससे कि जी मचलता है सिर दर्द तथा मुंह में दुर्गन्ध तथा दूसरी अन्य बीमारियाँ जैसे वीर्य का पतलापन तथा स्तम्भक शक्ति का ह्रास हो जाता है। क्योंकि अण्डा उत्तेजना पैदा करके शीर्घ ही वीर्य को स्खलित कर देता है, जिससे कि शीघ्र पतन की बीमारी लग जाती है जितना दूध, बादाम, मूंगफली खाने पर आमाशय में पाचक रस बनता है। उतना अण्डे के प्रोटीन से नहीं बनता। अण्डे की कच्ची सफेदी पर पाचक रसों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता और दूसरे

भोजनों के पचने में भी रुकावट उत्पन्न होती है। ईश्वर ने हमें स्वास्थ्यवर्धक शतायु जीवन-यापन करने के लिए अन्न, शाक, फल, दूध, मेवे, दूध घृत आदि अमृत तुल्य पदार्थ दिये हैं बच्चा पैदा होने से पूर्व ही माता के स्तनों में दूध आ जाता है फिर हम जीव हत्या करके अभक्ष्य, तामसी, मांसाहारी पदार्थों का प्रयोग क्यों करें। अण्डे का सेवन क्रूरता, निर्दयता, निर्लज्जता, उत्तेजना को जन्म देता है तथा शरीर में कोलोस्ट्रोल की मात्रा को बढ़ता है।

अण्डे का सेवन करने से मनुष्य का नैतिक चारित्रिक पतन भी हो जाता है जैसा पीयेगे पानी वैसी ही होगी वाणी, जैसा खाएँगे वैसा होगा मन। अतः स्वास्थ्य के लिए दूध, दाल, फल आदि शुद्ध भोजन है अण्डा, मांस, मछली, अशुद्ध है यही तो वस्तु स्वरुप की विचित्रता है जैसे सॉप के फन में नागमणी होती है और विष भी होता है। विष तो प्राणी को मार देता है जबकि नागमणि विष के जहर को मार देती है और प्राणी को बचा लेती है इस प्रकार वस्तु स्वरुप के अनुसार जैसे सॉप की मणि ग्राह्य है और विष त्याज्य है वैसे ही प्राणी का दुग्ध तो ग्राह्य है मांस त्याज्य है। जैसे विष वृक्ष का पत्ता और उसकी जड़ इन दोनों का उत्पादक कारण एक ही वृक्ष है फिर भी विष वृक्ष का पत्ता अमृत तुल्य और आयु रक्षक है। और जड़ जीवन नाशक होने से अभक्ष्य हैं। इसी प्रकार दूध अमृत तुल्य होने से भक्ष्य पदार्थ है और रक्त मांस आदि विष तुल्य होने से अभक्ष्य हैं। महाभारत में भी यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा कि अमृत क्या है ? तब युधिष्ठिर ने उत्तर दिया गोरस, दूध, दही, घी आदि अमृत है शाक, अनाज, दूध आदि पदार्थों को उबालकर जीवाणु रहित किया जा सकता है अतः दूध, फल आदि भक्ष्य है परन्तु अण्डा, मांस आदि को अग्नि में रख देने पर भी जीवाणु रहित नहीं कर सकते हैं अतः अण्डा व मांस त्याज्य पदार्थ है अतः स्वास्थ्य की दृष्टि से शरीर को पुष्ट एवं दुरुस्त रखने के लिए जितने प्रोटीन व विटामिन और खनिज तत्वों की आवश्यकता होती है वे सभी दूध में पाये जाते हैं अतः हरियाणा सरकार से निवेदन है कि वह कच्ची उम्र के बच्चों को मांसाहार की ओर प्रेरित न करें तथा आंगनबाड़ी केन्द्रों पर अण्डे के स्थान पर दूध, फल आदि पौष्टिक पदार्थों का वितरण कराए तथा भारत सरकार से निवेदन है कि वह बेतुके विज्ञापनों पर जैसे सण्डे हो या मण्डे रोज खाए अण्डे पर शीघ्र रोक लगाए जिसके शाकाहारी व्यक्तियों की भावनाओं को ठेस न लगे तथा कच्ची उम्र, कच्ची बुद्धि के बच्चों पर और युवाओं पर दुष्प्रभाव न पड़े और उनका जीवन अन्धकारमय न हो। जो कि शाकाहार एवं मांसाहार में विभेद न कर सकें।

अतः नीर-क्षीर विवेक के लिए सात्विक भोजन आवश्यक है। भोजन में हिंसा जनित अंडा-मांस आदि तामसिक पदार्थों तथा पापाचार से प्राप्त भोजन के सेवन से भोजन करने वालों के सद्विचार तथा सद्व्यवहार नष्ट होते हैं, सात्विक भोजन से है - सच्ची अरोग्यता, दीर्घायु मिलती है। तथा सात्विक बना शरीर मन स्वतः ही सन्मार्ग की ओर जाता है। अतः समाज को अराजकता की ओर से बचाने के लिए सात्विक भोजन आवश्यक है। अण्डा, मांस, मदिरा मनुष्य को पतन की ओर ले जा करके समाज में अराजकता को जन्म देती है।

पता - ग्राम व पो. - दौताई, गढ़मुक्तेश्वर, जनपद-गाजियाबाद (उत्तरप्रदेश)

हिन्दी विकास के उपाय

1. **घर और समाज की मानसिकता को बदलकर ही हम हिन्दी-वातावरण निर्माण कर सकते हैं, हिन्दी की श्रीवृद्धि में योग दे सकते हैं। घर में हिन्दी बोलें, हिन्दी के दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्र-पत्रिकाओं को खरीद कर पढ़ें, हिन्दी की साहित्यिक पुस्तकों को पढ़ने का स्वभाव बनाएं, निजी पत्र व्यवहार हिन्दी में करें।**
2. **घर में अंग्रेजी संस्कृति की छाप मिटाएं। मम्मी-डैडी, सिस्टर-ब्रदर, अंकल-आंटी शब्दों के प्रयोग का परित्याग कर माता-पिता, बहिन जी, भाई जी, चाची जी, चाचा जी से रिश्तों का परिचय दें।**
3. **अपने नाम-पट, व्यापारिक संस्थाओं के बोर्ड, बीजक बही खाते तथा लेटर पेड हिन्दी में रखें। पत्र व्यवहार में हिन्दी अपनाएँ।**

हमारे आदर्श

- डॉ. अशोक आर्य

दण्डी गुरु विरजानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द सरस्वती को महर्षि बनाने वाले, इतिहास में स्वर्णाक्षरों में स्थान पाने वाले दण्डी गुरु विरजानन्द जी का जन्म १८३५ वि. तद्नुसार १७७८ ई. को पंजाब के करतारपुर के समीप गंगापुर गांव के सारस्वत ब्राह्मण पं. नारायणदत्त जी के यहां हुआ। पंचवर्षीय अवस्था में चेचक के कारण आंखों की ज्योति जाती रही। पिता ने घर पर ही संस्कृत की शिक्षा दी, किन्तु छोटी आयु में ही माता-पिता ने साथ छोड़ दिया। भाई व भावज के व्यवहार से तंग आकर गृह त्याग कर ऋषिकेश व फिर कनखल चले गए। यहां स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास दीक्षा लेकर विरजानन्द नाम पाया।

कुंछ समय कनखल निवास के पश्चात् काशी चले गए, जहां विद्याधर जी से उच्चकोटि की शिक्षा प्राप्त की। यहां से गया जाकर अध्ययन व अध्यापन किया। यहां से क्रमशः कलकत्ता, सोरों, गड़ियाघाट गए। यहां एक दिन मन्त्रपाठ करते स्वामी जी को अलवर नरेश ने देखा तो वह उन्हें इस शर्त पर अलवर ले गए कि वह स्वामी जी से प्रतिदिन शिक्षा लेंगे तथा जिस दिन नहीं आवेंगे, उस दिन स्वामी जी अलवर छोड़ सकते हैं। शीघ्र संस्कृत सिखाने के लिए स्वामी जी ने **"शब्द बोध"** पुस्तक की रचना की। एक दिन राग रंग में मस्त अलवर नरेश गुरु जी के पास जाना भूल गया, बस स्वामी जी ने उसी दिन अलवर से प्रस्थान कर पुनः सोरों के गड़ियाघाट जा विराजे। यहां स्वामी जी को भयंकर रोग ने आ घेरा। स्वामी जी के शिष्य उन्हें अपनी सेवा के बल पर मौत के मुंह से वापिस लाये। अब स्वामी जी यहां से मुरसान, भरतपुर होते हुए मथुरा पहुंचे। यहां स्वामी जी ने पाठशाला खोली तथा नियमित शिक्षा दान करने लगे। पढ़ाने की उत्तम शैली के कारण शिक्षा के केन्द्र काशी से भी शिक्षार्थी स्वामी जी के पास आने लगे। स्वामी जी देश को स्वाधीन करा पुनः विश्व गुरु के रूप में देखना चाहते थे। वह जानते थे कि राजा के सुधार से लोग स्वयं ही सुधर जावेंगे । यही कारण है कि आपने राजाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। मथुरा में शास्त्रार्थ की चुनौती मिली, जिसे स्वीकार किया किन्तु यह शास्त्रार्थ कुटिलता की भेंट चढ़ गया। स्वामी जी अष्टाध्यायी और महाभाष्य नामक आर्ष ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थों को धूर्तों की कृति मानते थे। अतः स्वामी जी आर्ष ग्रन्थों के प्रचार व प्रसार में जुट गए। सन् १८५७ के भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के आप जनक थे। इस में भाग लेने वाले सभी राजा आपके शिष्य थे। यह योजना आपने अपने गुरु स्वामी पूर्णानन्द जी के आदेश से बनाई। इस योजना पर सभी शिष्य शासकों ने अमल किया। स्वामी जी एक सर्वधर्म सभा के माध्यम से भारत को एक संगठन में बांधना चाहते थे किन्तु जयपुर के राजा रामसिंह के इसमें रुचि न लेने से ऐसा सम्भव नहीं हो सका। स्वामी जी की शिक्षा की प्रसिद्धि चतुर्दिक फैल रही थी, किन्तु स्वामी जी भारत के उद्धार के लिए आर्ष ग्रन्थों के प्रसारार्थ शिष्य खोज रहे थे, इन्हीं दिनों प्रभु आदेश से स्वामी दयानन्द सरस्वती आपको शिष्य स्वरूप मिले। १९१७ वि. तदनुसार १८६० ई. को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुरु जी की इच्छानुरूप आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन किया। गुरुजी ने स्वामी दयानन्द को अपने सम विद्वान् बनाया तथा वैदिक प्रचार व स्वाधीनता आदि का बोझ अपने कन्धों से उतार दयानन्द के कन्धों पर दे डाला। इस प्रकार गुरु विरजानन्द को इस बात की खुशी थी कि जैसे शिष्य की आवश्यकता थी वह उनको अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में मिल गया। सम्वत् १९२५ वि. आश्विन की बदी त्रयोदशी सोमवार तदनुसार सितम्बर १८५८ ई. को निश्चित ही इस संसार से विदा हुए। उनके देहावसान का समाचार सुन महर्षि दयानन्द सरस्वती के मुख से निकला आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया है। आपका जीवन आर्ष ग्रन्थों के प्रचार-प्रसार को समर्पित था। जब तक सृष्टि रहेगी आपका नाम सूर्य के समान चमकता रहेगा। **पता - ११६, मित्र विहार, मण्डी डबवाली, हरियाणा**

व्यक्तित्व

परिचय : स्वामी ऋतस्पति जी परिव्राजक

वैदिक धर्म, दर्शन, साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान्, संन्यासी एवं प्रसिद्ध उपदेशक पूज्यपाद स्वामी ऋतस्पति जी परिव्राजक का जन्म मध्यप्रदेश जिला कटनी के ग्राम बरहठा में दिनांक ०१-०४-१९५६ को हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा समीपस्थ ग्राम मीठी के विद्यालय में हायर सेकेण्डरी तक तथा ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा (म.प्र.) में स्नातकीय शिक्षा सम्पन्न हुई। तदुपरान्त गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) में अष्टाध्यायी का अध्ययन करते हुये शास्त्री, गुरुकुल कालवा (हरियाणा) में व्याकरण का अध्ययन करके व्याकरणाचार्य, आर्य वन रोजड़ (गुजरात) से दर्शनाचार्य तथा योग विशारद की उपाधि प्राप्त की। अपनी कक्षा में सदा अग्रणी रहे। महाविद्यालय रीवा में अध्ययनकाल में सन् १९७५ ई. में आर्यसमाज रीवा के वार्षिकोत्सव में पूज्य स्वामी भूमानन्द जी सरस्वती के सत्संग व प्रवचनों से प्रभावित तथा प्रेरित हुए और उन्हीं दिनों महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश भी पढ़ने को मिला। इससे प्रेरणा पाकर आर्यसमाज के सत्संग में जान लगे तथा आर्यसमाज घोघर रीवा मध्यप्रदेश के सदस्य बनकर सक्रिय रुप से आर्यसमाज की गतिविधियों में संलग्न हो गये।

आजीवन ब्रह्मचर्य पूर्व साधना, स्वाध्याय एवं प्रचार कार्य करने के लिए आचार्य बलदेव जी नैष्ठिक से नैष्ठिक दीक्षा ली और पूर्व नाम ब्रह्मचारी जगत्प्रिय से जगद्देव नैष्ठिक के नाम से विख्यात हुए। वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय ई. सन् १९७६ से १९८६ तक निरन्तर चलता रहा। पाणिनि महाविद्यालय बहालगढ़ में पूज्य आचार्य डॉ. विजयपाल जी विद्यावारिधि से सम्पूर्ण निरुक्त शास्त्र एवं कातीयेष्टि कल्प ग्रन्थ का अध्ययन किया। ई. सन् १९८६ से १९८८ तक षड्दर्शन का विशेष अध्ययन करते हुए प्रसिद्ध योगवेत्ता पूज्य स्वामी सत्यपति परिव्राजक जी से दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ (गुजरात) में क्रियात्मक योगाभ्यास का ज्ञान प्राप्त किया और स्वयं योग प्रशिक्षण व प्रचार में लग गए। गुरुकुल होशंगाबाद में पांच वर्ष तक व्याकरण आदि का अध्यापन करते हुए स्वामी दयानन्द रचित साहित्य का विशेष अध्ययन तथा चारों वेदों का पारायण यज्ञ किया। इस प्रकार विद्यार्जन करने के उपरान्त पुनः २४ दिसम्बर १९८८ को आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद आए। ई. सन्, १९८९ में आर्यसमाज प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ की तत्कालीन प्रधाना माता कौशल्यादेवी जी द्वारा आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद के प्राचार्य पद का विशिष्ट दायित्व सौंपा गया। तब से अद्यावधि इस दायित्व का कुशलता से निर्वहन करते हुए गुरुकुल का संचालन कर रहे हैं।

इनके कुशल प्रबन्धक एवं संचालन से गुरुकुल की विशेष उन्नति हुई है। व्यवस्थित छात्रावास, वेदभवन, गोशाला आदि अनेक भवनों का निर्माण हुआ है और शिक्षा, आवास व भोजन की व्यवस्था में उत्तरोत्तर प्रगति हुई है। वर्तमान में गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर विभिन्न विद्वानों को सम्मानित करने की परम्परा प्रचलित हुई है। प्रदेश में युवकों को चरित्रवान् आदर्श एवं सभ्य नागरिक बनाने के लिए आर्यवीर दल की ४० शाखाओं का गठन एवं संचालन कराया है। प्रतिवर्ष गुरुकुल में भी संभागीय तथा प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर तथा योग प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करके समाज को विशेषतः युवकों को नई दिशा दे रहे हैं। मध्यप्रदेश के ग्रामीणांचल में स्थित बरहठा, खोजनपुर, ब्रमूरिया आदि ग्रामों में आठ आर्यसमाजों को स्थापित किया जो कुशलता पूर्वक वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न हैं।

भारत के १६ प्रान्तों में वैदिक धर्म का प्रचार कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त तीन बार नेपाल, सात बार मारिशिस, सिंगापुर व बैंकांक में आर्यसमाज का विशेष प्रचार किया है। मारिशस आर्य रवि वेद प्रचारिणी सभा द्वारा निर्मित एक आर्यसमाज भवन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मारिशस के प्रधानमंत्री डॉ. नवीनचन्द्र रामगुलाम जी भी पधारे। मारिशस में आर्यवीर दल की स्थापना भी की। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के २००१ से २००४ तक प्रधान रहे। इस अवधि में आर्यसमाज का विशेष प्रचार का कार्य

कराया। सार्वदेशिक सभा के उपरमंत्री, सार्वदेशिक आर्यवीरदल के उपप्रधान संचालक, विश्व कल्याण धर्मार्थ न्यास नई दिल्ली, पतंजलि योग समिति के प्रान्तीय बौद्धिक प्रमुख एवं भारत स्वाभिमान मध्यप्रदेश के प्रान्तीय संरक्षक हैं।

यद्यपि आपका जीवन नैष्ठिक ब्रह्मचर्य से ही संन्यासीवत् रहा है। तथापि वैदिक परम्परा के निर्वहन तथाअन्य आर्यजनों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करने हेतु आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् एवं योगी पूज्यपाद स्वामी सत्यपति परिव्राजक से दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ (गुजरात) मं १४ अप्रेल २००५ को संन्यास दीक्षा लेकर स्वामी ऋतस्पति परिव्राजक के नाम से विख्यात हुए। योगाभ्यास में विशेष परिश्रम करके पर्याप्त लाभ प्राप्त किया। ऋषि दयानन्द के समस्त साहित्य में यत्र-तत्र आगत वैदिक सिद्धान्तों व विषयों को क्रमानुसार संकलित करके सन्दर्भ ग्रन्थों के निर्माण की योजना है। आपने मोक्ष के जिज्ञासुओं के लिए एक पुस्तिका लिखी है, जिससे योग साधक लाभ उठा रहे हैं।

इनका जीवन त्याग एवं तपस्या का साक्षात् प्रतिमान है। ये एक निःस्पृह सन्यासी हैं। भौतिक आवश्यकताओं को न्यून रुप में ही प्रयोग करने का प्रयास करते हैं। जो भी दक्षिणा राशि मिलती है उसे प्रायशः गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एवं संस्था के कार्य में ही व्यय कर देते हैं। यज्ञ के बिना भोजन ग्रहण नहीं करते। विनम्र, मृदुभाषी, अतिथि सेवी, सरल, सत्यनिष्ठ, अनुशासित, निश्छल, उदारमना एवं व्यवहार कुशल सज्जन हे। जीवन के उपरोक्त विशेष गुणों एवं कार्यों को दृष्टिगत रखते हुए अनेक संस्थाओं ने आपको अभिनन्दित एवं सम्मानित किया है, जिनमें विश्व कल्याण धर्मार्थ न्यास दिल्ली, आर्य भिक्षु लीलावती परोपकारी न्यास हरिद्वार, पं. ऋषि तिवारी स्मृति सम्मान (मानव सेवा प्रतिष्ठान नई दिल्ली), आर्यसमाज शान्ताक्रुज (मुम्बई) एवं परममित्र मानव निर्माण संस्थान (रोहतक/गुरुकुल आमसेना) द्वारा प्रदत्त सम्मान आदि मुख्य हैं।

कविता

"पुष्प की अभिलाषा"

- रचयिता : **राम आर्य** 'व्यथित'

पुष्प हूँ, सौरभ बिखेरूँ मैं सदा उद्यान में,
पददलित कोई करे न व्यर्थ के अभिमान में
मैं शहीदों का पुजारी समर्पण उनके लिये
मातृभूहित शीष देने जो बढ़े उनके लिये
उनके चरणों में बिछूं मैं तीव्र अभिलाषा यही
धन्य हो पाऊं प्रभु मैं आपसे बिनती यही
एक आहुति बन सकूं इस यज्ञमय अभियान में
पददलित कोई करे न व्यर्थ के अभिमान में
स्वयं का अस्तित्व मेरा नहीं कोई है कहीं
जो मुझे गौरव दिया है, वो कभी मिलता नहीं
जानता हूँ कर्मफल की मान्यता से हूँ बंधा
इसलिये इस भावना से कंठ मेरा है रूंधा
आसुओं की धार निकले, शहीदे के मान में
पददलित कोई करे न व्यर्थ के अभिमान में

परम शक्ति ने मुझे वरदान दे सुरभि किया
जगत के कल्याण हेतु मुझे समर्पित किया
मंदिरों के चौखटों से दूर कर देना मुझे
प्रभुओं की सवारी पर फैंक मत देना मुझे
कोई भी मुझको न तोड़े व्यर्थ झूठी शान में
पददलित कोई करे न व्यर्थ के अभिमान में
सृष्टि की कितनी उमर है कितने कल्पाँतर गये
कितने कितने वर्ष बीते युग युगांतर गये
जन्म जन्मांतर भटकते जीव अपने कर्म से
मुक्ति भी मिलती मनुज को मात्र अपने धर्म से
जी रहे सब जीव जन्तु अपने स्वाभिमान में
पददलित कोई करे न व्यर्थ के अभिमान में

पुण्य स्मरण माताश्री स्वर्गीया श्रीमती सुदेश क्षत्रिय को भावभीनी श्रद्धांजलि

कहते हैं धार्मिक विद्वान् एवं धार्मिकी विदुषी माता-पिता बड़े सौभाग्य से ही प्राप्त होते हैं। मातृमान एवं पितृमान होने का परम सौभाग्य मेरे भाईयों एवं मेरा रहा है। हम सन्तानों से भी बड़ा सौभाग्य हमारी माता का रहा, जिन्होने हमारे प्रिय पिता स्व. डॉ. त्रिलोकीनाथ जी जैसा जीवन साथी मिला। हमारे पिता अविद्यान्धकार के सघन धुंध भरे कलियुग में जन्मे वेद वेद-दीप जी रहे सतयुग के दिव्य पुरुष थे। तीव्र वैराग्य के चलते अपनी इच्छा के विरुद्ध केवल माता-सन्तुष्टि विवाह बन्धन में बंधने हेतु स्वीकृति देने वाला मेरे पिता ने अपना विवाह बेहद सादगी से कराया था। ससुराल में आकर ही उन्हें वैदिक परम्पराओं का परिज्ञान हुआ। आप इस विचारधारा में पूर्णतः रंग गई। अपने पतिदेव की वह सच्चे अर्थों में अर्धांगिनी थीं। यद्यपि आध्यात्मिक दृष्टि से मेरे पिता एक उच्च कोटि के साधक एवं वेदों के उद्भट विद्वान् रहे हैं। इतना ही नहीं लिम्का वर्ल्ड रिकार्ड बुक में किसी समय सर्वाधिक पठित की उपाधि प्राप्त महापुरुष थे। पर मुझे लगता है कि उनके इस प्रभूत यश का बहुत पड़ा श्रेय माता जी का भी रहा है। वह माता जी की ही अथक सेवा का परिणाम था कि हमारे पिता ने अपनी माता को मरणासन्न रुग्णावस्था में भी हरिद्वार की यात्रा कराके जीवित मातृश्राद्ध एवं तर्पण कर पाए थे। पिताजी मृत्यु नामक पुस्तक में इन तथ्यों को उजागर करते लिखते हैं कि इस यात्रा का कारण ही उनका आशीष चार वर्ष और प्राप्त कर सके थे और इसका श्रेय अपनी पत्नी याने हमारी माता को देना नहीं भूलते थे।

पिताजी का पूरा जीवन धर्ममय एवं परोपकारमय रहा, अत्यन्त व्यस्ततम रहते थे। गृहस्थ की जिम्मेदारियों से मेरी माता ने ही उनके पूर्णतः निश्चिन्त कर रखा था, जिससे वे न केवल इतना अध्ययन कर पाए अपितु परोपकारमय समाज कार्य भी कर पाए! पिताजी भिलाई स्टील प्लांट में मुख्य अभियन्ता सुरक्षा एवं परियोजनापद से स्वैच्छिक सेवानिवृत्त रहे हैं इतने महत्वपूर्ण एवं व्यस्ततम पदभार को संभालते हुए भी पिता जी ने माता जी के सहयोग से ही सौ से अधिक गरीब झुग्गी-बस्तियों तथा साप्ताहिक भरने वाले बाजार हाटों में गरीब बच्चों के खेलकूद के माध्यम से धर्म-प्रचार कर पाए थे, आए दिन पिताजी वैदिक संगोष्ठियों के आयोजन किया करते थे और माता जी का पूरा पूरा सहयोग इनमें उन्हें प्राप्त होता था। सन् २०११ में पिता के इच्छा मृत्यु के पश्चात् माता जी का धैर्य पूर्णतः टूट चुका था, उन्होने अपने आप को घर की चार दीवारों में जैसे कैद कर लिया था, उस शोक से वर्षों आप उबर नहीं पाई थी, शायद अतिशोक में डूबे होने के कारण उन्हें जानलेवा कर्करोग हो चुका था। अत्यन्त पीड़ादायक कीमोथेरेपी चिकित्सा लम्बे समय तक चली, हम सभी परिजनों को उनके इस दोहरे कष्टमय जीवन संध्या का बड़ा ही दुःख होता था, पर सेवा सौभाग्य के अलावा हमारे हाथ बंधे हुए थे। माता जी के अपने पतिदेव के साथ निभाये धर्ममय कार्यों, दानशील प्रवृत्ति एवं पवित्र जीवन के बल पर हम यह निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि उन्हें परमपिता परमात्मा की ओर से सद्‌गति प्राप्त हुई, ईश्वर से प्रार्थना करते हैं हम सभी परिजनों को इस वज्रपात को सहने का सामर्थ्य प्रदान करें।

अपने माता-पिता के पद्‌चिन्हों पर चलते हुए उनके आदर्शों को और सपनों को ईश कृपा से हम सभी भाई-बहन पूर्ण कर सकें इस प्रार्थना के साथ मैं अपनी प्रिय माता श्रीमती सुदेश जी क्षत्रिय को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

- शुचि क्षत्रिय (सुपुत्री)

कविता

जी वो रहे हैं दुनियां में सारे,
पर जीना सभी को आता नहीं है,
चल तो रहे हैं सारे जहां में,
पर मंजिल तो हर कोई पाता नहीं है,
गम भी बहुत है हर जिन्दगी में,
पर गमों से ज्यादा खुशियां बहुत है,
गम से दुखी तो दिखते बहुत हैं,
पर खुशियां कोई अपनी गिनाता नहीं है,
फूलों सी महक फैले किसी का,
किसी की सड़न से परेशान सारे,
कौन गीत जग में गायेगा उनके,
जो काम किसी के आता नहीं है,
लूट कर चमन को खुश होने वाले,
शायद यह दौलत साथ जाये उनके,
किस हाल में कौन जाये जगत से,
यह मुकद्दर तो पहले बताता नहीं है,
कर्जदार है हम सारे वतन के,
है पंछी वतन से डोर जिन्दगी का,
"मोहन" रुतबा है उसका जहां में
जो इज्जत चमन की लुटाता नहीं है।

0-0

रचयिता : **मोहनलाल चड्डा,**
एमआईजी-II, १७३, हुडको, भिलाई (छ.ग.) ४९०००९

"लेखक"

-देवेन्द्र कुमार मिश्रा

अब लिखने
से पहले
सोचना होगा
इसकी क्या हिंसक
प्रतिक्रिया होगी
धमकी, तोड़फोड़ या हत्या
देश निकाला या कारावास
सच्चाई से मुंह चुराने से
सच तो वही रहेगा
अच्छा है कि आप
सच की आदत डाले
यदि लेखक को सोचना पड़ा
लिखने से पहले
लेखक तो नहीं लिखा पायेगा
जो लिखा जाना चाहिए
राजा-रानी, प्यार-मोहब्बत
की कहानी ही पढ़ने को मिलेगी
और आप साहित्य से
सत्य से वंचित रह जायेंगे।
लेखक तो मृत ही समझो।

पता : पाटनी कालोनी, भरत नगर,
चन्दनगाँव, छिन्दवाड़ा (म.प्र.०

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी से टॉन्सिल का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी

(होमियोपैथिक चिकित्सक)

मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

मौसम बदलते ही गले में खराश होना आम बात है। इसमें गले में कांटे जैसी चुभन, खिचखिच और बोलने में तकलीफ जैसी समस्याएं आती हैं। सामान्यतः लोग गले की खराश को छोटी बात समझकर उसे अनदेखा कर देते हैं। लेकिन गले की किसी भी परेशानी को ऐसे ही नजर अंदाज नहीं करना चाहिए। ये गंभीर बीमारी बन सकती है।

क्या है टॉन्सिल : टॉन्सिल गले को दोनों तरफ पाए जाने वाले बादाम के आकार के अंग हैं। यह शरीर के सिक्यूरिटी गार्ड के रुप में कार्य करते हैं जो कीटाणुओं, बैक्टीरिया और वायरस को हमारे गले में जाने से रोकते हैं। ये बाहर से आने वाले किसी भी रोग को हमारे शरीर में अंदर आने से रोकते हैं और बाहर के इन्फेक्शन से हमारी रक्षा करते हैं। अगर टॉन्सिल मजबूत होंगे तो वे बीमारी को शरीर में आने से तो रोकेंगे ही, साथ ही खुद भी उस इन्फेक्शन से बच जायेंगे। जब ये टॉन्सिल खुद ही संक्रमित हो जाते हैं, तो उन्हें **टॉन्सिलाइटिस** कहते हैं। इसमें गले के अंदर के दोनों तरफ के टॉन्सिल्स गुलाबी व लाल के रंग के दिखाई पड़ते हैं। ये थोड़े बड़े और ज्यादा लाल होते हैं। कई बार इन पर सफेद चकसे या पस भी दिखाई देता है। टॉन्सिलाइटिस की समस्या यदि लगातार बनी रहे तो इसे ठीक नहीं माना जाता है।

किस मौसम में होता है :-वैसे तो टॉन्सिलाइटिस इन्फेक्शन पूरे वर्ष में कभी भी हो सकता है लेकिन मौसम बदलने के दौरान खतरा ज्यादा रहता है। इन महीनों में बहुत ठंडा-गरम, तीखा आदि न खाएं तो टॉन्सिलाइटिस से बच सकते हैं।

किस उम्र में ज्यादा खतरा :- यह किसी भी उम्र के लोगों को हो सकता है, लेकिन १४ साल से कम उम्र में इसका खतरा ज्यादा होता है।

कैसे होता है ? :- (१) बहुत तेज गर्म खाना खाने से (२) प्रदूषण, धूल-मिट्टी आदि से (३) इम्यून सिस्टम (बीमारियों से लड़ने की क्षमता) कमजोर होने पर (४) ज्यादा मिर्च मसाले वाला तीखा और तला-भुना खाना खाने से (५) पेट खराब होने से गैस या कब्ज से। मौसम बदलते ही गले में खराश होना आम बात है। इसमें गले में कांटे जैसी चुभन, खिचखिच और बोलने में तकलीफ जैसी समस्याएं आती हैं। सामान्यतः लोग गले की खराश को छोटी बात समझ कर उसे अनदेखा कर देते हैं, लेकिन गले की किसी भी परेशानी को ऐसे ही नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। ये गंभीर बीमारी बन सकती है।

होमियोपैथिक में उपचार : कई रोगी उपचार कराकर ठीक हो गये हैं। कई रोगियों का उपचार चल रहा है।

होमियो औषधि :- नेट्रम सल्फ, फेरमफास, ब्रायोनिया, बैराइटा कार्ब, बेलाडोना आदि कई दवाईयाँ हैं, जो लक्षणों के आधार पर ईलाज हो सकती है। कोई भी औषधि चिकित्सक की सलाह से ही लेनी चाहिए।

परहेज :- मसालेवाली चीजें, ठंडी चीजें व मांसाहार का उपयोग नहीं करना चाहिए।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबन्ध, रायपुर ४९२००१ (छ.ग.)

श्रावणी सन्देश

आर्यवीरों जागो

प्यारे आर्यवीरों !

"सङ्घे शक्ति कलौयुगे" अर्थात् कलियुग में संगठन में शक्ति है। यह सूक्ति वर्तमान में बड़ा महत्व रखती है। आशय यह है कि आज जिस प्रकार से युवाओं का पतन होता जा रहा है। जिधर देखों युवाओं के नैतिक आध्यात्मिक व चारित्रिक पतन के ही दृश्य दिखाई व सुनाई दे रहे है। चारों तरफ भ्रष्टाचार, पापाचार, बलात्कार, आतंकवाद, भोगवाद, रोगवाद का ही साम्राज्य है। ऋषियों के सन्देश को फैलाने वाले, वेदों का प्रचार-प्रसार करने वाले, युवाओं को देश को, राष्ट्र को, समाज को तथा नर-नारियों को जगाने वालों का अभाव देखा जा रहा है। **"कृण्वन्तों विश्वमर्यायम्"** के नारे लगाने वाले भी अब यत्र-तत्र बिरले ही हैं और जो हैं वो केवल "मुख में नारे बोलने वाले हैं।" कर्त्तव्य पथ से दूर हटते जा रहे हैं।

अतः आओ ! उठो ! जागो ! कमर कसो। चरित्रवान, दृढ़-प्रतिज्ञ और बलवान बनो। देश, धर्म, संस्कृति को बचाना हैं, आर्यों को जगाना है। नर-नारियों को संगठित कर स्वस्थ, सबल और उन्नत राष्ट्र बनाना है। वेदों व यज्ञों का प्रचार-प्रसार करना है। ऋषियों के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाना है। राष्ट्र निर्माण तथा योग्य कर्मठ, त्यागी, तपस्वी, सेवाभावी, संयमी, सदाचारी, समर्पित देशभक्त, ईश्वर भक्त, मातृ-पितृ सेवक नौजवानों का निर्माण करना व कराना है। तदर्थ श्रवणमास के पुनीत अवसर पर एक सुसंकल्प लें तथा तन-मन व धन से जिससे जैसे बन पड़े देश, धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिए सदैव कटिबद्ध (उद्यत) रहने के लिए कृतसंकल्प हों।

- बौद्धिकाचार्य डॉ. दिव्येश्वर शास्त्री, आ.वी.द. छ.ग.

तुलाराम आर्य हाई स्कूल, लवन में ६९वाँ स्वतन्त्रता दिवस समारोह सम्पन्न

लवन (बलौदाबाजार) । प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी ६९वाँ स्वतन्त्रता दिवस समारोह सभा द्वारा संचालित विद्यालय प्रांगण में दिनांक १५ अगस्त २०१५ को प्रातः ७.४५ बजे हर्षोल्लास से मनाया गया । इस पावन पर्व में आर्य श्री दीनानाथ वर्मा मंत्री छ.ग. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के कर कमलों द्वारा ध्वाजारोहण सम्पन्न हुआ । सभा बांड़ा लवन प्रबंधक श्री रामकुमार वर्मा, सहायक श्री महेश प्रसाद तिवारी, प्राचार्या श्रीमति मंदाकिनी ताम्रकार सहित शिक्षिकायें तथा शाला नायक श्री धनेश्वर साहू एवं समस्त छात्र-छात्राएं उपस्थित रही । निम्नलिखित गणमान्यगण उपस्थित होकर अपना उद्‌बोधन दिए जिसमें श्री अजय ताम्रकार (पार्षद), श्री पारस ताम्रकार (पार्षद), श्री देवीलाल बार्वे, श्री मनोज पाण्डेय, श्री हरीशचन्द्र साहू, श्री ताराचन्द साहू हवलदार, श्री दुर्गेश पाण्डेय, श्री भारत जायसवाल, श्री तिलकराम साहू, श्री निर्मलकर आदि निम्नलिखित छात्र-छात्राओं को उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं उद्‌बोधन के लिए पुरस्कार से सम्मानित किया गया- श्री ईश्वर वर्मा छत्तीसगढ़ी गीत गायन, कु. आरती साहू, कु. भारतीय तिवारी, कु. पूनम पाण्डेय, श्री हेमंत, कु, जय, कु. मीनाक्षी, कु. गीतांजलि, कु. दीप्ति, कु. चांदनी, कु. सुप्रीता, कु. डिंपल, श्री महेन्द्र, कु. मनीषा साहू, श्री समीर, मूलचंद, कु. पिंकी वर्मा, कु. माला, कु. हिमानी, कु. नीतू, कु. दुर्गेश, कु. प्रियंका, कु. दीपिका, कु. निष्ठा, कु. निशा, कु. नीलिमा, राहुल चन्द्राकर, कु. आरती, कु. पूजा, कु. प्रमिला, कु. मनीषा आदि । अपने उद्‌बोधन में मंत्री जी ने कहा कि आजादी सबको प्रिय है । आज के ही दिन सन्. १९४७ में भारत आजाद हुआ । अंग्रेजों की गुलामी की बेड़ियों से भारतमाता आजाद हुई । दिनांक २७ अगस्त २०१५ को सभा बांड़ा लवन में जीर्णोद्धार एवं भव्यीकरण पश्चात् लोकार्पण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है, जिसमें सभी को आमंत्रित किया गया ।

- कार्यक्रम से लौटकर मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा

महर्षि दयानन्द आर्य उच्च. माध्य. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में स्वतन्त्रता दिवस समारोह सम्पन्न

रायपुर । हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी १५ अगस्त २०१५ को छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित विद्यालय प्रांगण में ६९वाँ स्वतन्त्रता दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । इस समारोह के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य जी द्वारा ध्वाजारोहण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । भव्य एवं आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया । इस अवसर आर्यसमाज टाटीबन्ध के समस्त पदाधिकारीगण, प्राचार्य एवं शिक्षक-शिक्षिकायें उपस्थित रहे ।

- निज संवाददाता

तुलाराम आर्य विद्यालय कूंरा में स्वतन्त्रता दिवस समारोह सम्पन्न

रायपुर । हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित विद्यालय प्रांगण में ६९वाँ स्वतन्त्रता दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । इस समारोह के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री (कार्यालय) श्री दिलीप आर्य द्वारा ध्वाजारोहण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । भव्य एवं आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया । इस अवसर प्राचार्य एवं शिक्षक-शिक्षिकायें एवं गणमान्य नागरिकगण उपस्थित रहे ।

- निज संवाददाता

आर्यसमाज भवन बड़ेपन्धी (कसलबा) में भूमि पूजन सम्पन्न

बड़ेपन्धी (महासमुन्द) । दिनांक ९-८-२०१५ दिन रविवार को महालीम डोंगरी, कसलबा रोड बड़ेपन्धी के पावनधरा पर आर्यसमाज वेदमंदिर निर्माण हेतु भूमि पूजन का कार्यक्रम समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस पावन अवसर पर प्रातः ८ बजे से १० बजे तक वैदिक महायज्ञ के पश्चात् सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा आशीर्वचन एवं उद्बोधन प्रातः १० बजे दिया गया। भूमि पूजन का कार्यक्रम दोपहर १२.३० बजे से १.०० बजे तक सम्पन्न होने के पश्चात् ऋषि लंगर का पुनीत आयोजन किया गया, जिसमें शताधिक अबालवृद्ध नर-नारियों ने ऋषि प्रसाद ग्रहण किया।

अवगत हो कि सभा द्वारा १,५०,०००/- रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की है।

कार्यक्रम मुख्य अतिथि माननीय रामलाल चौहान जी विधायक सरायपाली एवं अध्यक्षता माननीय डॉ. सुदर्शनदेव जी आचार्य अधिष्ठाता गुरुकुल हरिपुर उड़ीसा के साथ विशिष्ट अतिथिगण सर्वश्री माननीय श्री बसंत पण्डा जी नेता प्रतिपक्ष विधानसभा ओड़िशा एवं विधायक नूआपाड़ा, श्रीमती रुपकुमारी चौधरी जी माननीय संसदीय सचिव छ.ग. शासन, आचार्य अंशुदेव जी सभा प्रधान, श्रीमती अनिता पटेल जी अध्यक्ष जिला पंचायत महासमुन्द, मान. श्री श्याम ताण्डी जी सभापति जिला पंचायत महासमुन्द, श्रीमती सरस्वती देवधर चौहान जी सदस्य जिला पंचायत महासमुन्द, श्रीमती सरस्वती चन्द्र कुमार पटेल जी अध्यक्ष नगर पालिका सरायपाली, यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य दिलीप कुमार जिज्ञासु प्रांतीय वेद प्रचार अधिष्ठाता सभा, सम्मानीय विद्वान् डॉ. कुञ्जदेव जी मनीषी उपाचार्य गुरुकुल आश्रम आमसेना (उड़ीसा)। कार्यक्रम के संयोजक श्री वैष्णव भोई आर्य प्रधान आर्यसमाज बड़ेपन्धी, श्रीमती कुन्ती भोई आर्य एवं समस्त ग्रामवासी ग्राम बड़ेपन्धी (कसलबा) रहे। कार्यक्रम के विशेष सहयोगी आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के समस्त सम्माननीय पदाधिकारीगण तथा कार्यक्रम को सफल बनाने में निम्नलिखित सज्जनों का महती योगदान रहा - श्री ताराकान्द प्रधान आर्य मंत्री आर्यसमाज बड़ेपन्धी, श्रीमती गीतारामधन जगत (सरपंच), श्री विजय प्रधान (जनपद सदस्य), श्री अमृत पटेल (जोगनीपाली), सर्वश्री ताराचन्द आर्य, बिरंची बगर्ती, चित्रसेन पटेल, पूर्णचन्द्र भोय, भास्कर प्रधान, देवराज मिश्रा, किशोर प्रधान, कंचन भोय, चतुर्भुज आर्य, रणजीत आर्य, खगेश्वर पटेल, रवि साहू, राजेन्द्र सिरार, नीलाम्बर कश्यप, बाबूलाल प्रधान एवं दाशरथी यदु।

आर्य गुरुदास चावला को श्रद्धांजलि

बिलासपुर । आर्यसमाज बिलासपुर के उप प्रधान श्री गुरुदास चावला का आकस्मिक निधन विगत ११ अगस्त २०१५ को हो गया। इनका अंतिम संस्कार बिलासपुर के गणमान्य नागरिकों एवं आर्यजनों की उपस्थिति में सरकंडा स्थित मुक्तिधाम में वैदिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार से सम्पन्न हो गया। आप बड़े ही स्वाध्यायी, सत्संगी एवं आर्यसमाज के प्रति समर्पित कार्यकर्ता थे। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं अंतरंग सदस्य एवं अग्निदूत परिवार श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

आर्य शिक्षा समिति दुर्ग-भिलाई द्वारा स्वतंत्रता दिवस समारोह सम्पन्न

दुर्ग । सभा के अधीन आर्य शिक्षा समिति दुर्ग-भिलाई के संरक्षक श्री गुलाबमुनि वानप्रस्थी, अध्यक्ष श्री हरीश बंसल सचिव श्री संतोष शर्मा द्वारा संचालित डी.ए.वी. मॉडल कालेज एवं डी.ए.वी. मॉडल हायर सेकेण्डरी स्कूल आर्यनगर दुर्ग, महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय मठपारा दुर्ग, महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय गयानगर दुर्ग, महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय कुरुद रोड कोहका में स्वतंत्रता दिवस समारोह सोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें समस्त पदाधिकारी, प्राचार्य, प्राचार्या एवं शिक्षक/शिक्षिकायें सहित समस्त छात्र-छात्रायें उपस्थित रहे।

कामधेनु यज्ञ एवं गौरक्षा सम्मेलन सम्पन्न

हाथीगढ़ (गबौद बागबाहरा) । दिनांक २ अगस्त २०१५ रविवार को प्रातः १०.३० बजे से ग्राम हाथीगढ़ गबौद निकट बागबाहरा जिला महासमुन्द में आचार्य अंशुदेव जी सभा प्रधान छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में आयोजित किया गया ।

उक्त अवसर में गुरु पूर्णिमा दिनांक ३१-७-२०१५ से दिनांक २-८-२०१५ तक त्रि दिवसीय कामधेनु यज्ञ का आयोजन किया गया और त्रिदिवसीय आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया ।

श्री गोलोकधाम गौशाला ग्राम हाथीगढ़ में गौरक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य दिव्येश्वर जी शास्त्री, मुख्य अतिथि माननीय श्री चुन्नीलाल जी साहू विधायक खल्लारी विधानसभा क्षेत्र, मुख्य वक्ता श्री भुवनेश्वर साहू जी प्रदेश सहमंत्री विश्व हिन्दू परिषद एवं विशिष्ट अतिथि श्री विमल चोपड़ा जी विधायक महासमुन्द एवं श्री बसंत पण्डा विधायक नुआपाड़ा उड़ीसा, गौरक्षा एवं गौवंश संवर्धन पर विद्वानों का सारगर्भित उद्‌बोधन में यह कहा गया कि गौरक्षा से ही राष्ट्र, धर्म व संस्कृति की रक्षा संभव है । सभा प्रधान द्वारा १० हजार रुपये का नगद आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया । इस अवसर पर गोलोकधाम आश्रम के आचार्यों के नेतृत्व में आकर्षक व्यायाम व शक्ति प्रदर्शन, जिसमें लोहे के छड़ मोड़ना, छाती पर पत्थर तोड़ना, गाड़ी रोकना, मलखम्ब व योगासान, प्राणायाम आदि कार्यक्रम आयोजित किया गया । उक्त कार्यक्रम गुरुकुलीय ब्रह्मचारियों को सभा द्वारा नगद ५०० रु. का पुरस्कार दिया गया । कार्यक्रम में सभा प्रधान के अलावा श्री दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री, श्री दिलीप आर्य कार्यालय मंत्री, श्री दयाराम वर्मा प्रधान आर्यसमाज बैजनाथ पारा रायपुर, श्री छबिलसिंह रघुवंशी मंत्री आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर भी उपस्थित रहे । कार्यक्रम के आयोजक आचार्य जितेन्द्र कुमार, श्री जयसिंह आर्य, आचार्य ब्रह्मप्रकाश आर्य रहे । सदस्यगण श्री भागवत गुरुजी, श्री जगतराम जी दीवान, श्री डी.आर. ठाकुर विशिष्ट सहयोगी श्री विश्वदीप ठाकुर एवं श्री टेकराम दीवान (सरपंच) उपस्थित रहे ।

- दीनानाथ वर्मा

शुरु हुई एक स्वस्थ परम्परा : जन्मदिन पर लाइब्रेरी को पुस्तक भेंट की

नन्दिनी (भिलाई) । विगत दिनों डी.ए.वी. इस्पात पब्लिक स्कूल नन्दिनी माइन्स के शिक्षक शिक्षिकाओं ने प्रार्थना सभा में सकारात्मक सोच कर कुछ प्रेरणादायी विचार व्यक्त किए थे, जिससे प्रेरित होकर १२ कक्षा में पढ़ने वाली एक छात्रा अंजलि मसीह ने अपने जन्मदिन पर अपनी कक्षा में मिठाई बांटने की जगह विद्यालय के पुस्तकालय हेतु साहित्य उपहार प्रदान कर एक नई एवं स्वस्थ परम्परा का सूत्रपात कर दिया । उसके पश्चात् १२वीं कक्षा में ही पढ़ने वाले सूर्यकान्त शर्मा ने अपने जन्म दिन पर किताब भेंटकर इस पुण्य परम्परा में एक नया अध्याय जोड़ दिया है । अब आलम यह है बच्चों में अपने जन्मदिन पर मिठाई या चाकलेट बांटने की बजाय विद्यालय के पुस्तकालय हेतु निरन्तर ज्ञानवर्धक एवं छात्रोपयोगी पुस्तकें भेंट करने की एक श्रृंखला सी चल पड़ी है। अध्ययन एवं ज्ञान प्राप्ति की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है। आजकल लोगों में धीरे-धीरे पुस्तक पढ़ने की प्रवृत्ति में काफी कमी महसूस की जा रही है। ऐसी परिस्थिति में यह एक बहुत बड़ा संदेश भी है।

हम सभी जानते हैं आज का समय बहुत आधुनिकता की ओर अग्रसर है । इन्टरनेट के इस युग में जब जमाना विकीपीडिया से एक प्रकार ग्रस्त सा होता जा रहा है, यह एक अनोखी पहल कही जा सकती है। वैसे भी पुस्तकालयों में पुस्तक के महत्व को नकारा नहीं जा सकता, किसी महापुरुष ने पुस्तक को देवालय की संज्ञा प्रदान की है। पुस्तक भेंट करने का कदम न केवल प्रशंसनीय है, बल्कि अनुकरणीय भी है। प्राचार्य श्री राजशेखर पालीवाल एवं विद्यालय प्रबंधन ने इस कार्य की मुक्तकंठ से सराहना की।

निजी संवाददाता : डी.ए.वी. इस्पात स्कूल, नन्दिनी

सभा बांड़ा लवन भवन का जीर्णोद्धार पश्चात् लोकार्पण सम्पन्न

लवन। अत्यन्त हर्ष का विषय है कि दिनांक २७ अगस्त २०१५ को दानवीर तुलाराम जी परगनिहा आर्य द्वारा दान में दी गई भू-सम्पत्ति सभा बांड़ा लवन के भवन का जीर्णोद्धार पश्चात् लोकार्पण कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। प्रातः ११.०० से १२.३० तक विश्व कल्याण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान रहे। यजमान के रुप में सभा उपप्रधान श्री सोमप्रकाश गिरी, सभा मंत्री, सभा उपमंत्री (कार्यालय) श्री दिलीप आर्य के अलावा समस्त शिक्षक-शिक्षिकायें यज्ञ में आहुति प्रदान किये। दोपहर १२.३० बजे यज्ञोपरान्त लोकार्पण कार्यक्रम माननीय सभा प्रधान, सभा पदाधिकारी एवं नगर पंचायत लवन के तीन पार्षदों के साथ गणमान्य महानुभावों के सौजन्य से सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् लगभग ४०० की उपस्थिति में लोकार्पण कार्यक्रम की अध्यक्षता आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान, पावन सान्निध्य श्री सोमप्रकाश गिरी उपप्रधान सभा, श्री दीनानाथ वर्मा मंत्री सभा, श्री दिलीप आर्य उपमंत्री (कार्यालय) सभा, सर्वश्री पारस ताम्रकार पार्षद, अजय ताम्रकार पार्षद, दुर्गेश बाजपेयी, देवीलाल बार्वे, पंचराम आर्य, गिरधारी साहू, शत्रुघन साहू, कन्हैया चतुर्वेदी, साधेलाल वर्मा, फिरतराम साहू, मनहरणलाल श्रीवास्तव ग्राम टुण्डरी, श्रीमती प्रमिला चतुर्वेदी, प्रबंधक रामकुमार वर्मा, उपप्रबंधक महेश कुमार तिवारी आदि महानुभावों का उद्बोधन हुआ। तुलाराम आर्य माध्यमिक विद्यालय लवन के प्राचार्य श्रीमती मंदाकिनी ताम्रकार द्वारा सम्बोधन किया गया। कु. उषा वर्मा शिक्षिका द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया। विद्यालय के लगभग ३२५ छात्र-छात्रायें एवं समस्त शिक्षिक-शिक्षिकायें कार्यक्रम में उपस्थित रहे। उपरोक्त कार्यक्रम छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि के सौजन्य से हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

- लवन से लौटकर दीनानाथ वर्मा

योग-ध्यान, साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक २७ सितंबर से ४ अक्टूबर २०१५ तक निःशुल्क योग-ध्यान, साधना शिविर का आयोजन किया गया है ष जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जाएंगे तथा योगदर्शन-पठन-पाठन की भी व्यवस्था है। शिविर में रोजड़, गुजरात से शिक्षित एवं कात्यायमुनि विद्यापीठ के आचार्य श्री सन्दीप आर्यजी, वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर पूज्य महात्मा जी के ब्रह्मत्व में प्रतिवर्ष की भांति सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे।

आश्रम में पूज्य महात्मा जी के सान्निध्य में पहले लगाए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं, इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। अतः इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षिक करने के लिए **फोन नं. ०९४१९१०७७८८ व ०९४१९१९८४५१** पर तुरन्त **सम्पर्क करें।**

- भारतभूषण, आनन्द आश्रम, प्रधान

आर्य दैनन्दिनी-२०१६ (डायरी)

जैसा कि आप सभी को विदित है कि आर्य प्रकाशन हर वर्ष आर्य दैनन्दिनी का प्रकाशन करता है तथा उसमें संन्यासी, विद्वान्, विदुषी, भजनोपदेशक तथा गुरुकुलों के नाम, दूरभाष नं. सहित प्रकाशित करता है। अतः आपसे निवेदन है कि आप अपने नाम के साथ दूरभाष व अपता भेजें, जिससे कि सही नम्बर प्रकाशित हो सके। कई विद्वानों के नम्बर बदल गये हैं, अतः आप सभी से निवेदन है कि आप सब अपना नया नम्बर और पता भेजें। ताकि उसे दैनन्दिनी में भली प्रकार प्रकाशित किया जा सके।

यह आप १५ सितम्बर २०१५ तक ई-मेल **aryaprakashan@gmail.com** अथवा एसएमएस, डाक निम्नलिखित पते पर भेजने की कृपा करें :-

आर्य प्रकाशन (संजीव आर्य)

८१४, कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-१०००६,
मोबा. ०९८६८२४४९५८

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

आर्यजनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन रविवार, सोमवार, मंगलवार दिनांक ६, ७ एवं ८ मार्च २०१६ को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्यसमाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्यजनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

निवेदक : रामनाथ सहगल, मंत्री

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं।**

अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. ९७७०३६८६१३ में सम्पर्क कर सकते हैं। **- दीनानाथ वर्मा, मंत्री** मो. ९८२६३६३५७८

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)491001, फोन : ०७८८-२३२२२२५

सभा द्वारा संचालित तुलाराम आर्य माध्य. विद्यालय लवन में
स्वतन्त्रता दिवस के अवसर सभा मंत्री द्वारा छात्राओं पुरस्कृत करते हुए

दिनांक 27 अगस्त 2015 रविवार को दानवीर श्री तुलाराम जी परगनिहा आर्य
भू-समपत्ति सभा बांड़ा लवन के भवन का जीर्णोद्धार पश्चात् लोकार्पण कार्यक्रम
के अवसर पर उपस्थित सभा प्रधान आचार्य अंशुदेवआर्य,
सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा एवं अन्य सम्माननीय अतिथिगण

सितम्बर 2015
डाक पंजी. छ.ग./ दुर्ग संभाग / 99 / 2015-17
CHH-HIN/2006/17407

प्रेषक :
अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य
प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग -491001 (छ.ग.)

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

सेवा में,
श्रीमान्

त्रैवार्षिक साधारण सभा बैठक एवं सभा का निर्वाचन

-: सूचना :-

सभा की अन्तरंग बैठक दिनांक 24-8-2015 में लिये गये निर्णयानुसार सभा का त्रैवार्षिक साधारण सभा बैठक एवं सभा का निर्वाचन दिनांक 11 अक्टूबर 2015 (रविवार) को रायगढ़ में आयोजित किया जायेगा। महाधिवेशन की विधिवत सूचना अलग से यथासमय प्रेषित की जायेगी।

अतः सभी मान्य प्रतिनिधियों से अनुरोध है कि त्रैवार्षिक साधारण सभा बैठक में, निर्धारित स्थान व समय पर उपस्थित होने की कृपा करेंगे।

मंत्री
दीनानाथ वर्मा

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिंटर्स, मॉडल टाऊन, भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया.